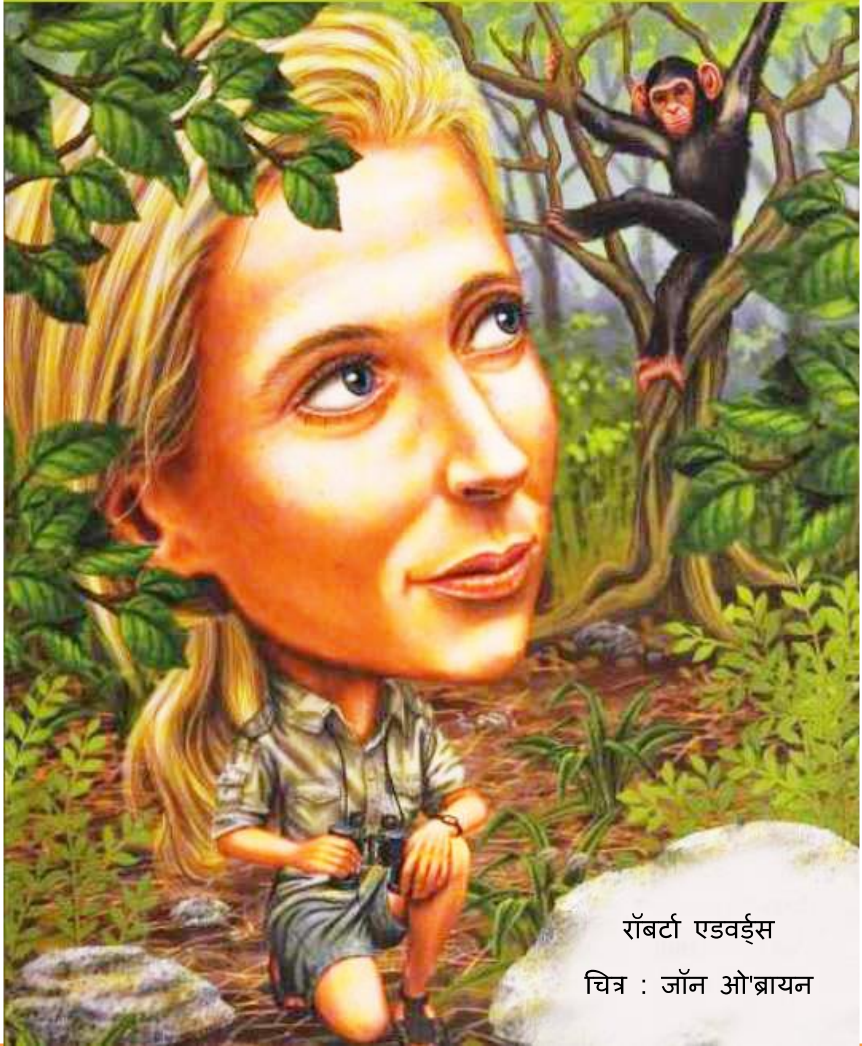
जेन गुडॉल कौन हैं?



रॉबर्टा एडवर्ड्स

चित्र : जॉन ओ'ब्रायन

जेन गुडॉल कौन हैं?



रॉबर्टा एडवर्ड्स

चित्र : जॉन ओ'ब्रायन

विषय-वस्तु



जेन गुडॉल कौन हैं?

जब जेन गुडॉल एक साल से थोड़ी बच्ची थीं, तो उनके पिता ने उन्हें एक खिलौना जानवर दिया. वो कोई पिल्ला, बिल्ली का बच्चा या खरगोश नहीं था. वो कपड़े का बना, और रुई से भरा एक बड़ा चिंपैंजी था!

जेन्स के पिता ने चिम्पांजी को क्यों चुना?

1935 का समय था. लंदन के चिड़ियाघर में एक चिंपैंजी के बच्चे "जुबली" का जन्म हुआ था. जेन्स के माता-पिता लंदन में ही रहते थे और जुबली नाम के छोटे चिंपांजी की खबरों को पढ़ते थे. पर उसमें इतनी बड़ी बात क्या थी? इससे पहले, सभी चिम्पांजी अफ्रीका में जंगली में ही पैदा हुए थे, चिड़ियाघरों में नहीं.



इसलिए जेन के खिलोने चिंप का नाम भी "जुबली" रखा गया.

जब जेन अपने खिलोने के पेट को दबाती थी तो उसमें से संगीत बजता था. चूंकि जुबली देखने में इतना वास्तविक था, इसलिए कुछ लोगों को वो चिंपाजी, एक छोटी बच्ची के लिए बहुत डरावना लगा. कहीं जुबली के कारण जेन को बुरे सपने न आएं? लेकिन वे गलत थे. जेन, जुबली से प्यार करती थी और वो जहां भी जाती वो अपने खिलौने को साथ लेकर जाती थी.

जब वो बहुत छोटी थी तब जेन गुडॉल को इस बात का अंदाजा नहीं था कि वह अपना अधिकांश जीवन असली चिंपांज़ियों के बीच में बिताएगी. लेकिन असल में उसने यही किया. जिन चिंपांज़ियों के बारे में जेन ने शोध किया वे चिड़ियाघर में नहीं रहते थे. वे पूर्वी अफ्रीका के जंगलों में खुलेआम घूमते थे.

समय के साथ, चिंपांज़ियों ने जेन को भी एक अन्य चिंपांजी समझा और वो उसके साथ भी वे वैसा ही व्यवहार करने लगे. उनके लिए जेन एक ऊंची, मजाकिया दिखने वाली, सफेद चिंपांजी थी. चूंकि चिंपांज़ियों ने उसे स्वीकार कर लिया था, शायद इसीलिए जेन गुडॉल इन अद्भुत जानवरों के बारे में पहले की तुलना में कहीं अधिक जानने में सक्षम हुई. उसने देखा कि कैसे चिम्पांजी माएं अपने बच्चों की देखभाल करती थीं. उसने देखा कि कैसे चिम्पांजी एक-साथ काम करते थे और एक-साथ खेलते थे.

जेन ने यह भी सीखा कि कैसे चिम्पांजी खुशी, भय, क्रोध और उदासी दिखाते थे. सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जेन गुडॉल ने दुनिया के सामने यह साबित किया कि मनुष्य और चिंपांज़ी आपस में कितने एक-समान थे.



जहाँ तक जुबली चिंपैंजी की बात थी, जेन ने अपने खिलौने कभी किसी को नहीं दिया. आज भी, जुबली जेन के घर में, एक ड्रेसर पर आराम से बैठा रहता है.

क्या चिंपैंजी बन्दर होते हैं?

नहीं.

अक्सर छोटे बच्चे किसी चिंपैंजी की तस्वीर देखकर तुरंत कहेंगे कि वो एक बंदर है. पर चिंपैंजी या चिम्प्स, बंदर नहीं होते हैं. चिम्प्स - एप्स (एक प्रकार के वनमानुष) होते हैं - इनमें गोरिल्ले और ओरंगुटान शामिल हैं.



एप्स

बंदर?

एप्स की पूंछ नहीं होती है. लगभग सभी प्रकार के एप्स के हाथ काफी मजबूत होते हैं और वे एक पेड़ की शाखा से, दूसरे पेड़ की शाखा तक झूलकर जा सकते हैं. अधिकांश बंदर ऐसा नहीं कर सकते. वे शाखाओं के शीर्ष के ऊपर चलते हैं. एप्स के कंकाल बहुत हद तक, मानव कंकालों की तरह दिखते हैं. बंदर के कंकाल काफी कुछ कुत्तों, बिल्लियों और अन्य छोटे स्तनधारियों के कंकालों की तरह दिखते हैं.



बंदर

बंदर, एप्स और मनुष्य सभी प्राइमेट्स नामक पशु समूह से संबंधित हैं. एप्स, पशु साम्राज्य में मनुष्य के सबसे करीबी रिश्तेदार हैं.

अध्याय 1

पशु प्रेमी

जेन गुडॉल का जन्म 3 अप्रैल, 1934 को लंदन, इंग्लैंड में हुआ था. लंदन दुनिया के महानतम शहरों में से एक है. हालाँकि, जेन को शहर के मुकाबले गांव में कहीं अधिक मज़ा आता था. उसे बाहर रहना, प्रकृति की खोज करना पसंद था. फिर उसका परिवार शहर से बाहर एक बगीचे वाले घर में शिफ्ट हो गया. जिस चीज में जेन की सबसे ज्यादा दिलचस्पी थी वो थे जानवर - सभी प्रकार के जानवर. किताबों द्वारा जानवरों के बारे में सीखना दिलचस्प था. लेकिन जेन के लिए किताबों में दिए तथ्य पर्याप्त नहीं थे.

जेन खुद जानवरों को देखकर उनके बारे में पता लगाना चाहती थी. एक बार उसने कुछ केंचुए खोदे. वो उन्हें घर में ले आई और उसने उन्हें अपने तकिए के नीचे रख दिए. जेन उनके साथ सोना चाहती थी! फिर माँ ने उसे समझाया कि कीड़ों को उनके अपने ही घरों में रहना ज़रूरी था.



छोटी जेन निराश हुई, लेकिन फिर वो केंचुओं को बगीचे में छोड़ आई.

जब वो लगभग पाँच वर्ष की हुई, तब जेन यह देखने को उत्सुक थी कि मुर्गियाँ, अंडे कैसे देती थीं. उसकी दादी के घर के पिछवाड़े में मुर्गियों का एक दबड़ा था.

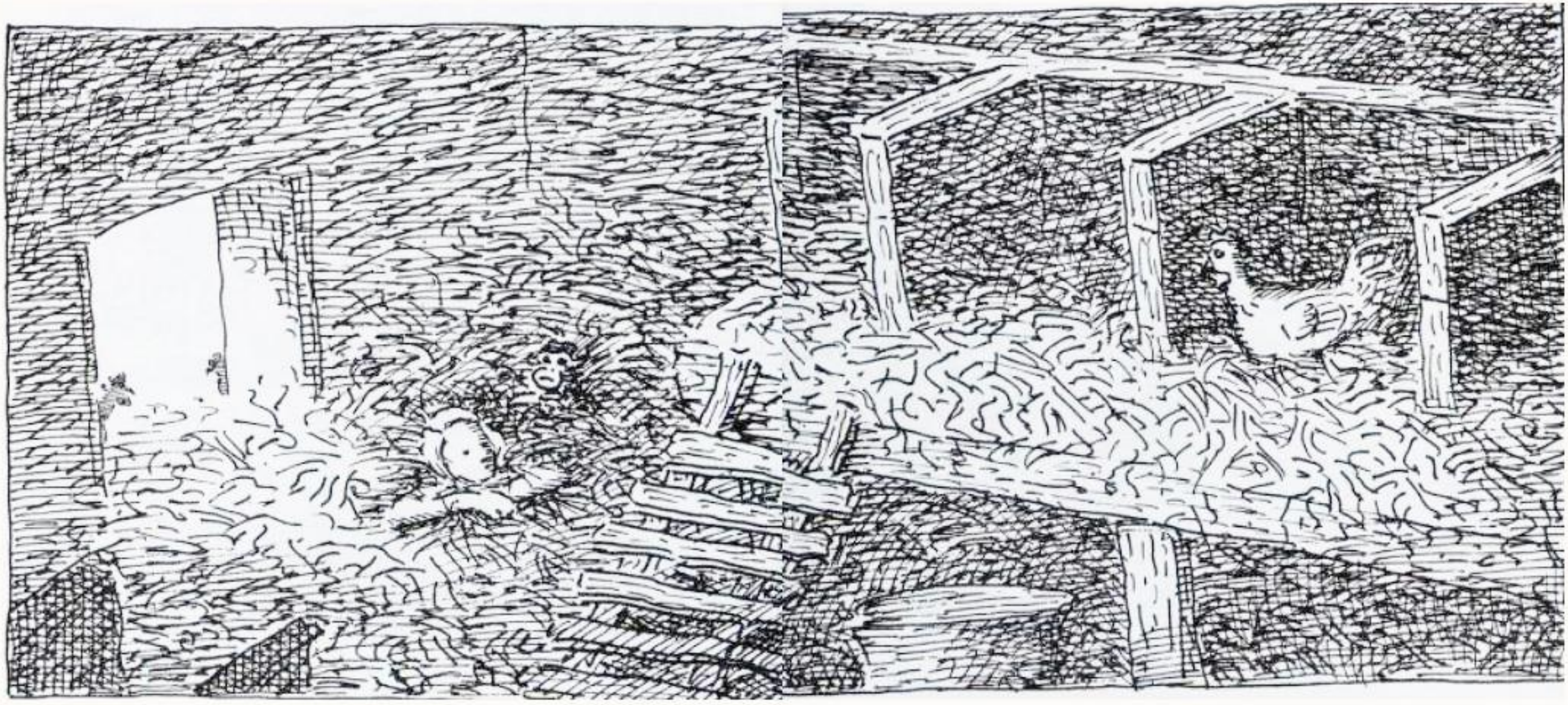
वो जेन के लिए मुर्गी द्वारा अंडा देते हुए देखने का अच्छा मौका था.

जेन के साथ जुबली भी था. वो खाली मुर्गी के दबड़े में घुस गई.

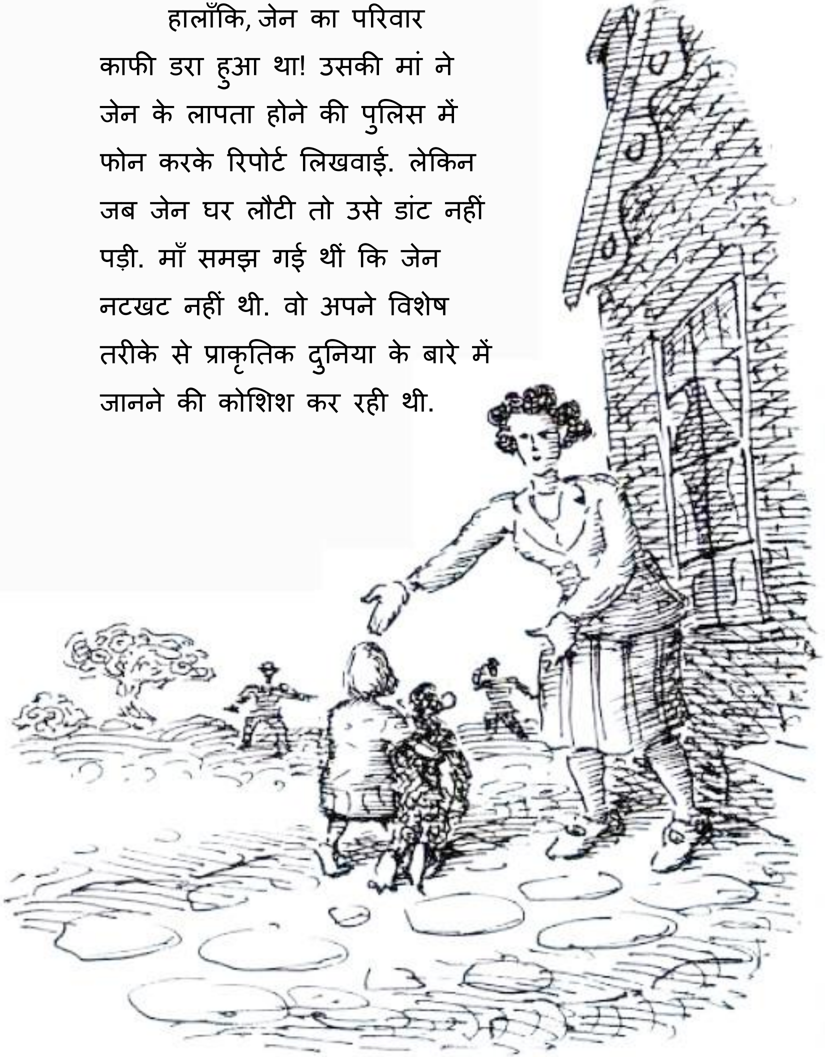
फिर उसने मुर्गी के आने का इंतजार किया. जेन इतनी स्थिर रही कि मुर्गी ने उसे नोटिस ही नहीं किया. घंटों बीत गए. जेन इंतजार करती रही और देखती रही. अंत में, पाँच घंटों के बाद, जेन ने वो देखा, जिसे वो देखने आई थी.

मुर्गी के नीचे से एक अंडा बाहर निकला!

जेन बहुत उत्साहित हुई.

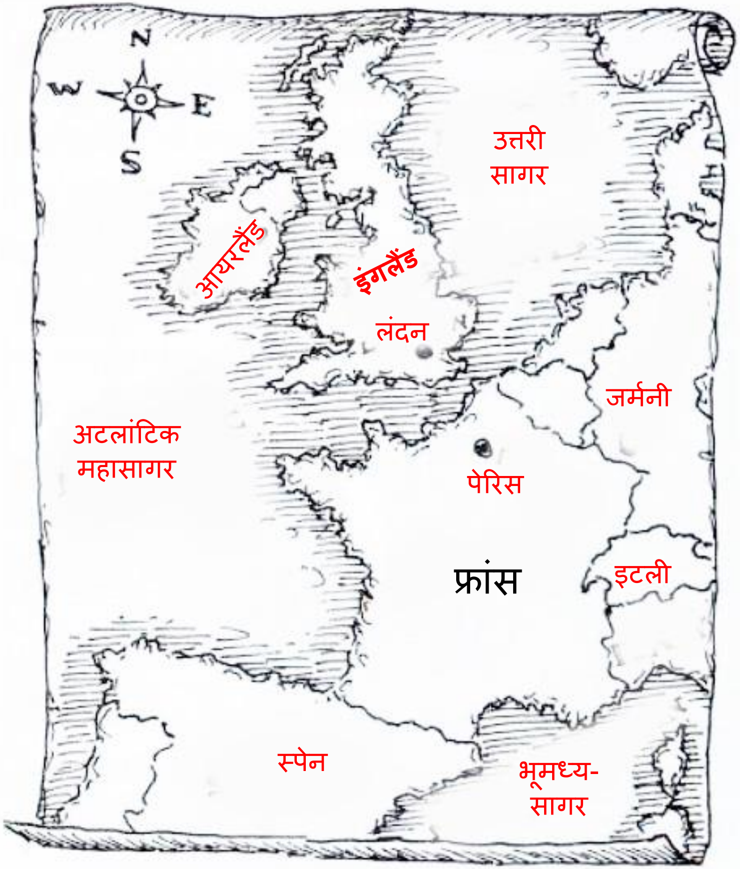


हालाँकि, जेन का परिवार काफी डरा हुआ था! उसकी मां ने जेन के लापता होने की पुलिस में फोन करके रिपोर्ट लिखवाई. लेकिन जब जेन घर लौटी तो उसे डांट नहीं पड़ी. माँ समझ गई थीं कि जेन नटखट नहीं थी. वो अपने विशेष तरीके से प्राकृतिक दुनिया के बारे में जानने की कोशिश कर रही थी.





जेन की मां को लोग वन्ने बुलाते थे. वो उपन्यास लिखती थीं. जेन्स के पिता मोर्टिमर एक इंजीनियर थे जो बाद में रेस-कार ड्राइवर बन गए. जेन के चौथे जन्मदिन पर उसकी बहन जूडी का जन्म हुआ. ज़रा कल्पना करें इस बात की कि आपके बहन या भाई का जन्मदिन भी, आपके ही जन्मदिन पर हो!



आज भी जेन का तंजानिया में एक घर है. ग्रब और उसके बच्चे ठीक बगल में ही रहते हैं. लेकिन जेन साल में केवल दो बार ही, छोटी यात्राओं के लिए ही गोम्बे आती हैं. वो साल में तीन सौ दिन, दुनिया भर में घूमने में बिताती हैं, और लोगों को उन कारणों से अवगत कराती है जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं.

युद्ध से ठीक पहले, जेन का परिवार फ्रांस में रह रहा था. उसके पिता वहां कारों की रेस में हिस्सा ले रहे थे. हालांकि, युद्ध शुरू होने के बाद, परिवार इंग्लैंड लौट आया. मोर्टिमर, नाजियों के खिलाफ लड़ाई में, ब्रिटिश सेना में शामिल हुए.वन्ने और उनकी दो छोटी बेटियाँ, वन्ने की माँ के साथ रहने चली गईं, जो समुद्र तटीय शहर बोर्नमाउथ में रहती थीं. बोर्नमाउथ, लंदन से सौ मील दूर था, और लंदन में रहने की तुलना में अधिक सुरक्षित था. लंदन पर जर्मनी ने 1940 के सितंबर में बमबारी करना शुरू कर दी थी.



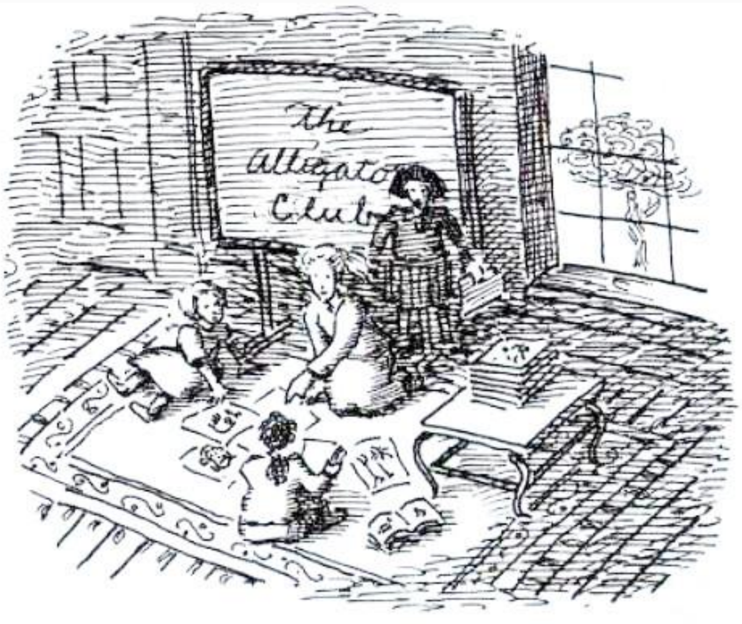
ब्लिट्जक्रेग

जर्मन में, "ब्लिट्जक्रेग" का अर्थ होता है "बिजली जैसा युद्ध." इस शब्द का प्रयोग आश्चर्यजनक हवाई हमलों के लिए किया जाता है. 7 सितंबर, 1940 को, जर्मन विमानों ने लंदन शहर पर बम गिराए. वो हमले, आठ महीनों से अधिक समय तक चले. वो एक भयावह समय था. अक्सर रात में छापेमारी होती थी. अक्सर बमबारी शुरू होने से पहले बहुत कोई चेतावनी नहीं दी जाती थी. लोग सब-वे स्टेशनों में भागकर भूमिगत हो जाते थे. जब बमबारी बंद होती, तो लोग फिर सड़कों पर लौट आते थे और वहां पड़े मलबे को देखते थे. जहां केवल कुछ मिनट पहले इमारतें खड़ी थीं वहां अब मलबे के ढेर पड़े होते थे. बम धमाकों में लगभग तीस हजार लोगों की मौत हुई. अन्य पचास हजार घायल हुए. फिर भी, अंग्रेजों ने कभी भी जर्मनों के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया. युद्ध 1946 की वसंत में, यूरोप में जर्मनी की हार के बाद समाप्त हुआ. लंदन में गुडॉल का पहला घर अभी भी खड़ा था, लेकिन वहां पर एक लाख से अधिक इमारतें नष्ट हो चुकी थीं. लंदन को फिर से बनाने में दशकों लगे.



1943 में, वन्ने और उनकी बेटियाँ बोर्नमाउथ में अपने घर में रहने चली गईं. जेन ने अपना शेष बचपन वहीं बिताया. जेन उस समय आठ साल की थी. तब तक मोर्टिमर अपनी पत्नी और बेटियों से अलग रह रहे थे.

जेन सबसे ज्यादा खुश तब होती जब वह रस्टी नाम के एक कुत्ते के साथ बाहर घूम रही होती थी. उसने अपनी बहन और दो दोस्तों के साथ एक नेचर क्लब भी शुरू किया. जेन ने क्लब के लिए बहुत सारे नियम बनाए.



जेन, निश्चित रूप से उसकी नेता थी. सदस्यों को विभिन्न प्रकार के जानवरों की पहचान करना सीखना होता था. प्रत्येक सदस्य का एक कोड नाम था. क्लब काफी मजेदार और दिलचस्प था. लेकिन जेन के दोस्तों को लगता था कि कभी-कभी जेन उनपर बहुत ज्यादा धौंस जमाती थी!



जेन को जानवरों के बारे में किताबें पढ़ना भी बहुत पसंद था. ह्यू लॉफ्टिंग द्वारा लिखी गई "डॉक्टर डूलिटल" की कहानियों से उसे विशेष प्रेम था. उसके पसंदीदा डॉक्टर डूलिटल, अफ्रीका गए और वहां वो जंगली जानवरों से बात करने में सक्षम हुए. जेन समझ गई कि वो कभी भी बाघ या जिराफ या बंदर के साथ बातचीत नहीं कर पाएगी. लेकिन वो इतना जानती थी कि अफ्रीका में, जंगली जानवरों के करीब रहना उसके लिए संभव था. जब वो दस साल की हुई, तब जेन ने तय किया कि वो अपने जीवन के साथ आगे जाकर क्या करेगी.

1952 तक, जेन के माता-पिता में तलाक हो गया. लेकिन जेन ने कभी भी अपने पिता के साथ संपर्क नहीं खोया. लेकिन वो कभी भी अपने पिता के उतना करीब भी नहीं थी जितनी वो वन्ने के साथ थी.

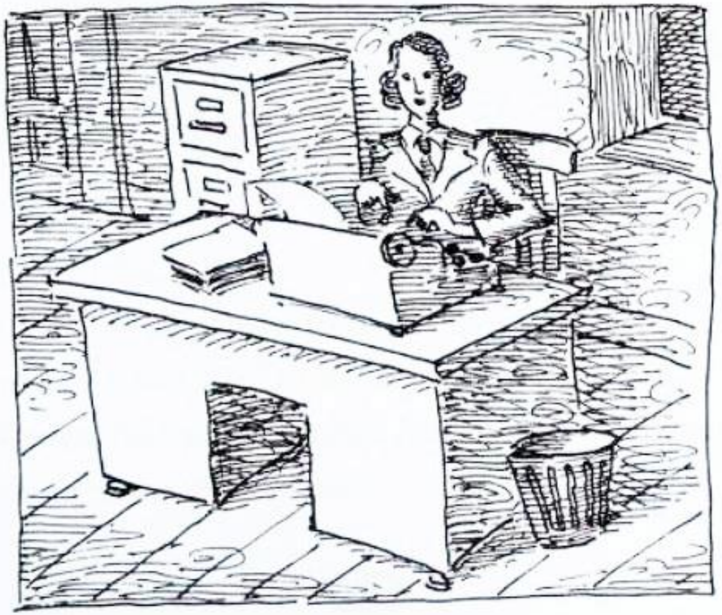
टार्ज़न – "द जंगल हीरो"



टार्ज़न, अफ़्रीकी जंगल में एप्स द्वारा पाला गया मानव, एडगर राइस बरोज़ द्वारा सर्वाधिक बिकने वाले उपन्यासों का हीरो था. उनकी पहली पुस्तक, "टार्ज़न ऑफ़ द एप्स", 1914 में प्रकाशित हुई. टार्ज़न की पहली फिल्म 1916 में प्रदर्शित हुई, क्योंकि उससे पहले मूक "टॉकीज़" था, तब से, टार्ज़न की लगभग नब्बे फ़िल्में बन चुकी हैं. सबसे लोकप्रिय फ़िल्में 1930 और 1940 के दशक में सामने आईं. उन फिल्मों में जॉनी वीसमुलर, एक पूर्व ओलंपिक तैराक हीरो बना. टार्ज़न का सबसे अच्छा दोस्त चीता नाम का एक चिंपांज़ी था, और हीरो की प्रेमिका का नाम जेन था.

जेन गुडॉल ने कहा है कि टार्जन फिल्मों ने भी उन पर, अपनी एक छाप छोड़ी थी. टार्ज़न, जेन के सपनों की ज़िंदगी जी रहा था.

जेन अब हाई स्कूल स्नातक की डिग्री पूरी कर रही थी. हालाँकि वो एक बहुत अच्छी छात्रा थी, लेकिन उसके पास कॉलेज की फीस के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे. इसलिए जेन लंदन चली गई और वहां उसने एक सेक्रेटरी की नौकरी कर ली. लंदन शहर रहने के लिए एक रोमांचक जगह थी. हालांकि, जेन ने अपनी मां और नानी को बताया कि उसका काम काफी नीरस था. अपने काम से वो अक्सर परेशान हो जाती थी. फिर एक दोस्त की मदद से उसे एक कंपनी में नौकरी मिली, जो फिल्में बनाती थी. वो काम कहीं अधिक दिलचस्प था.



फिर भी, जेन ने अफ्रीका जाने का सपना देखना कभी बंद नहीं किया. वो वहां जाकर काम करना और रहना चाहती थी और जानवरों के प्राकृतिक परिवेश में उनका अध्ययन करना चाहती थी.

पर परिस्थितियां जेन के पक्ष में नहीं थीं. 1950 के दशक में, वैज्ञानिक, जानवरों का अध्ययन, चिड़ियाघरों या प्रयोगशालाओं में ही करते थे, न कि जंगलों में. पशु वैज्ञानिक वर्षों तक पढ़ाई करते थे, उधर जेन गुडॉल के पास कॉलेज की कोई डिग्री तक नहीं थी. और उस समय, डिग्री वाली महिलाओं के पास भी, करियर के बहुत सीमित ही विकल्प मौजूद थे. अधिकांश महिलाएं टीचर बनतीं या फिर नर्स बन जाती थीं.

फिर जेन एक अलग जीवन जीने का तरीका कैसे खोजेगी जिसके लिए वो तरस रही थी?

अध्याय दो

एक निमंत्रण

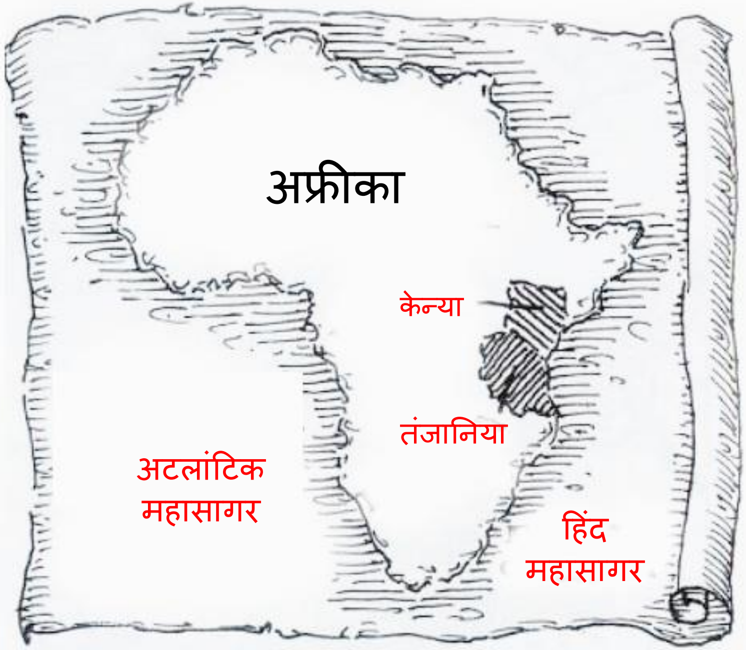


1956 में एक पत्र आया जिसने जेन गुडॉल की जिंदगी बदल दी. उसकी पुरानी स्कूल की दोस्त क्लो ने उसे एक पत्र लिखा. क्लो के परिवार ने अफ्रीका के केन्या में, एक फार्म खरीदा था. क्लो चाहती थी जेन उसके पास आकर रहे. क्या जेन ने जाने के बारे में दो बार सोचा?

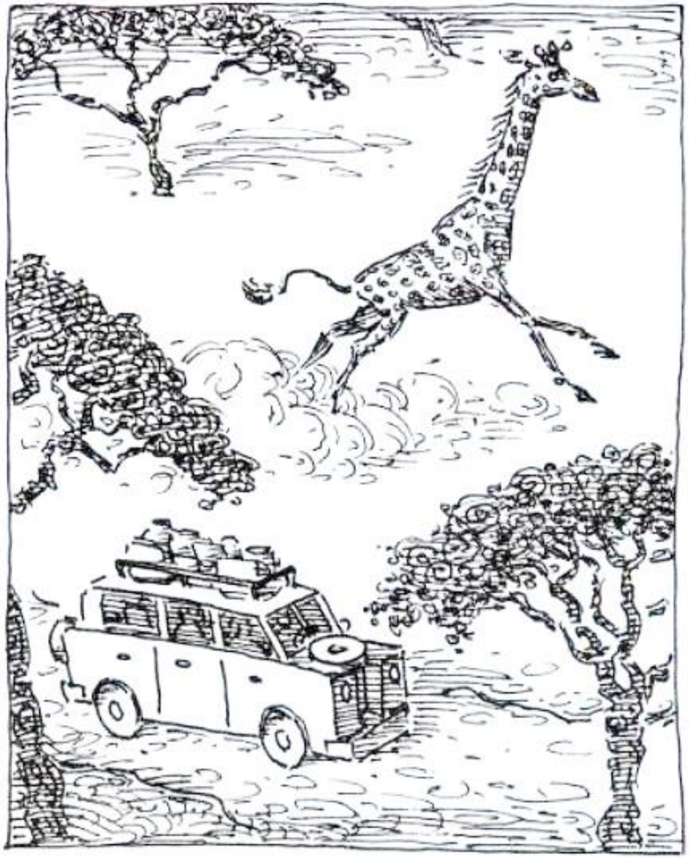
बिल्कुल नही!

अफ्रीका की यात्रा महंगी थी. लंदन में रहना भी महंगा था. इसलिए जेन अपनी मां के पास, बोर्नमाउथ वाले घर में वापस चली गई. उसने एक वेट्रेस के रूप में काम करके यात्रा के लिए पैसे बचाए. जेन के बहुत अच्छी वेट्रेस थी. वो अपनी दोनों बाहों पर एक-साथ तेरह प्लेटें संतुलित कर सकती थी!





13 मार्च, 1957 को जेन का अफ्रीकी रोमांच शुरू हुआ. वो तेईस साल की थी. वो इंग्लैंड में, तीन सप्ताह की यात्रा के बाद केन्या पहुंचने के लिए एक जहाज पर सवार हुई. मोम्बासा शहर से, उसने अंतर्देशीय ट्रेन पकड़ी. 3 अप्रैल का दिन था—उसका जन्मदिन! गंदी सड़कों पर एक लंबी ड्राइव के बाद, जेन रात के खाने और जन्मदिन के केक के लिए अपनी पुरानी दोस्त क्लो के फार्म पर पहुँची.



उसी दिन जेन ने एक जिराफ देखा. वो पिंजरे में नहीं था. जिराफ एक सड़क के किनारे चल रहा था. जेन को इस पर विश्वास नहीं हुआ! उसका, वो जन्मदिन कितना शानदार था!

जेन जानती थी कि वो कुछ हफ्तों से ज्यादा अपने मित्र के फार्म पर नहीं रह सकती थी. आखिर वो वहां एक मेहमान थी. वो एक मेहमान जैसे वहां केवल कुछ दिन ही रहना चाहती थी. उसे अब एक ऐसी नौकरी की जरूरत थी जिससे वो अफ्रीका में रह सके.

जेन की किस्मत अच्छी थी. एक पार्टी में, वो एक ऐसे व्यक्ति से मिली जिसने जेन को प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई लीकी से मिलवाया. लुई लीकी और उनकी पत्नी मैरी ब्रिटिश नागरिक थे. लेकिन केन्या उनका घर था.



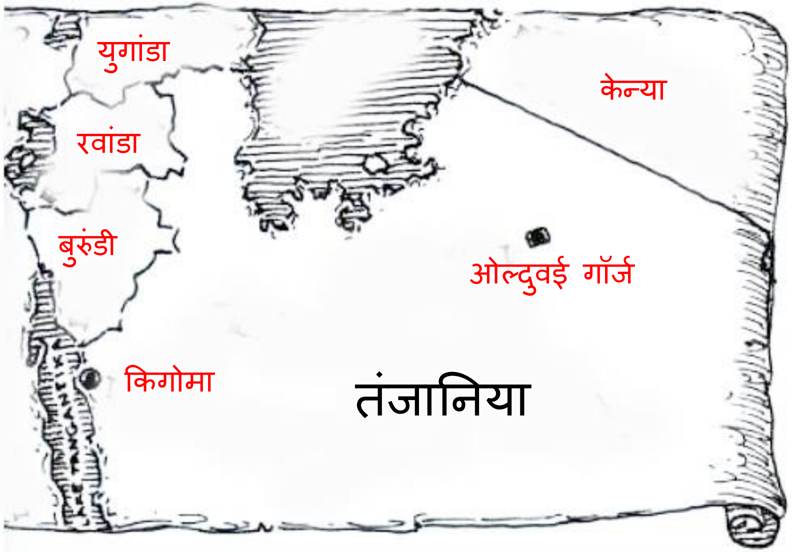
लुइस और मैरी लीकी

लुई लीकी

लुइस लीकी का जन्म अगस्त 1903 में केन्या में हुआ था. उनके माता-पिता ग्रेट ब्रिटेन में पैदा हुए थे. वे किकुयू जनजाति को ईसाई धर्म सिखाने के लिए अफ्रीका गए थे. लुई का सबसे पहला घर एक छोटी सी झोपड़ी थी, जिसका फर्श मिट्टी का था. छत, फूस से बनी थी और वो बारिश में लीक करती थी. बड़े होने पर लुई ने खुद को अफ्रीकी अधिक और अंग्रेज कम महसूस किया. उसके सभी दोस्त अफ्रीकी थे. जब लुई एक किशोर था, तो किकुयू लोगों ने उसे अपनी जनजाति की सदस्यता के साथ सम्मानित किया.



तेरह साल की उम्र में, लुई को आदम मनुष्यों द्वारा बनाए गए कुछ पत्थर के औजार मिले. इस खोज ने, मानव की उत्पत्ति का अध्ययन करते हुए उनके आजीवन कैरियर को जन्म दिया. अपनी दूसरी पत्नी, मैरी लीकी के साथ, उन्होंने मानव पूर्वजों के जीवाश्मों को इकठ्ठा किया.



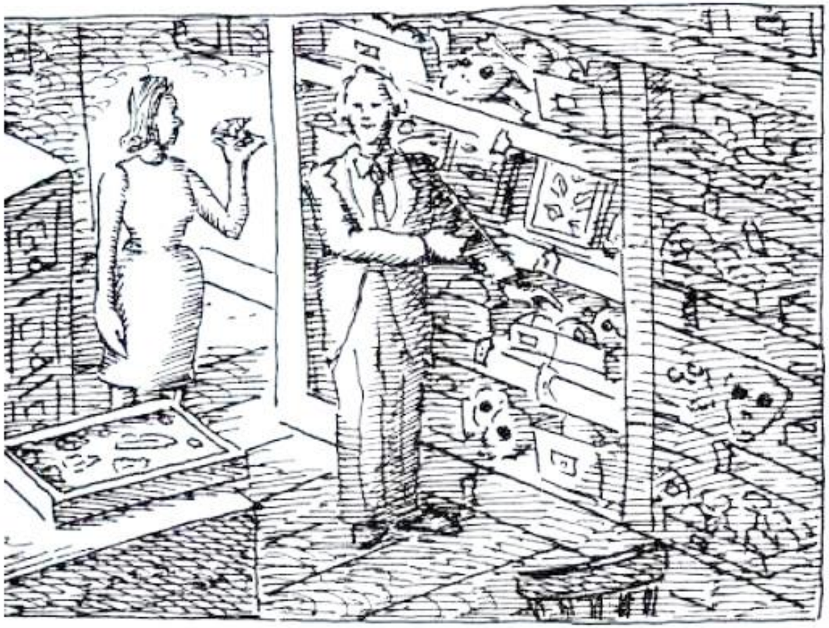
लीकी दंपत्ति ने तंजानिया के ओल्दुवई गॉर्ज में काम किया. (उस समय उस देश को तांगान्यिका कहा जाता था.)

एक प्रसिद्ध जीवाश्म खोजी होने के अलावा, लुई लीकी ने अफ्रीका के वन्यजीवों की रक्षा के लिए बहुत काम किया. उन्होंने उन दो युवतियों के करियर में भी मदद की, जो अफ्रीका में, जंगली जानवरों का अध्ययन करने के लिए आईं. उनमें एक थी जेन गुडॉल. दूसरी थी डियान फॉसी, जो गोरिल्लों के साथ अपने काम के लिए प्रसिद्ध हुईं. "गोरिल्ला इन द मिस्ट" डियान फॉसी के काम पर बनी एक अद्भुत फिल्म है.

लुइस लीकी की मृत्यु 1972 में इंग्लैंड में, जेन गुडॉल की मां, वन्ने से मिलने के दौरान हुई.

पूर्वी अफ्रीका के मैदानी इलाकों में ओल्डुवई गॉर्ज में, लीकी के नेतृत्व वाले समूह जीवाश्म खोजने के लिए खुदाई की. वे डायनासोर के जीवाश्म नहीं खोज रहे थे. लीकी, आदिम इंसानों के जीवाश्मों की तलाश में थे. उस समय तक अधिकांश वैज्ञानिक सोचते थे कि पहले मनुष्य एशिया से आए थे. लुई का मानना था कि पहले मनुष्य अफ्रीका से आये थे. लेकिन अंत में लीकी सही निकले!

1960 में, लीकी को बहुत ही प्रारंभिक मानव प्रजाति के जीवाश्म मिले. उन्हें "होमो हैबिलिस" के नाम से जाना जाने लगा. "होमो हैबिलिस" लगभग 2.3 से 1.4 मिलियन वर्ष पहले पृथ्वी पर रहते थे. वो आधुनिक मनुष्य की तुलना में वानर की तरह अधिक दिखते थे. उनका सिर छोटा था, ऊंचाई छोटी थी, पर उनके हाथ बहुत लंबे थे.





होमो हैबिलिस

लुई लीकी को जेन पसंद आई. वो शर्मीले स्वभाव की थी. लेकिन लुई बता सकता था कि वो होशियार थी और वो रोमांच की भावना से ओतप्रोत थी. लुई ने जेन को एक नौकरी सुझाई. जेन ने उसे तुरंत स्वीकार किया!

जेन ने केन्या के नैरोबी शहर में, एक संग्रहालय में, लीकी के सेक्रेटरी के रूप में काम किया. लेकिन तुरंत ही, लीकी ने जेन को ओल्डुवई गॉर्ज में, जीवाश्म खोदने का मौका दिया.



जेन ने उस तरह का काम पहले कभी नहीं किया था. वो जीवाश्मों की खुदाई के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी. लेकिन वो एक तेज सीखने वाली थी. हर दिन घंटों तक, जेन, मिट्टी और चट्टानों को छोटे औजारों से खोदती थी. कभी-कभी उसे सुदूर अतीत से किसी प्राणी की हड्डी मिल जाती थी. लेकिन आमतौर पर उसे कुछ नहीं मिलता था. काम थका देने वाला था. शुष्क मौसम में ओल्डुवई गॉर्ज रेगिस्तान की तरह हो जाता था.



गैंडा

फिर भी, जेन के लिए वो एक अद्भुत समय था. उसने लिखा कि "यह जंगली, अछूता अफ्रीका था. वहां मेरे बचपन के सपनों के सभी जानवर थे." उसने शेर, एक गैंडा, और ढेर सारे हिरण थे. उसने डिक-डिक देखे, जो छोटे मृग थे, और एक कुत्ते के आकार के थे.



गज़ेल्स
(हिरण)



डिक-डिक

लुई लीकी से, जेन ने चिम्पांज़ियों के बारे में सीखा जो तांगानिका झील के पास के जंगलों में रहते थे. वे लंबे बालों वाले चिंपैंजी थे. लीकी को चिम्पांज़ियों में दिलचस्पी थी क्योंकि उनका मानना था कि प्रारंभिक (आदम) मनुष्यों और चिम्पांज़ियों में बहुत कुछ समानतायें थीं.

जंगली चिंपैंजी दुनिया में और कहीं नहीं, सिर्फ अफ्रीका में ही पाए जाते थे. जंगली चिम्पांज़ियों पर एक अध्ययन किया गया था. हालांकि, वो सिर्फ तीन महीने ही चला था. लीकी को लगता था कि चिम्पांज़ियों के बारे में कुछ भी महत्वपूर्ण सीखने के लिए और लम्बे समय तक अध्ययन की आवश्यकता थी. जेन के पास कोई पूर्व अनुभव नहीं था. यह उनका अफ्रीका में पहला मौका था. फिर भी उनको लगा कि जेन गुडॉल इस काम के लिए एकदम उपयुक्त थीं.

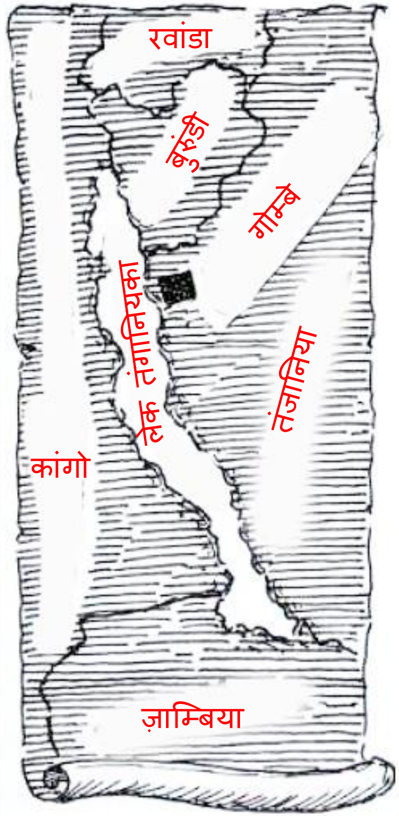
जेन को भी वैसा ही लगा!

जुलाई 1960 में, जेन, गोम्बे स्ट्रीम गेम रिजर्व में गईं, जो अब तंजानिया देश में है. सबसे पहले वो दो अफ्रीकी स्काउट्स से मिलीं जो इस क्षेत्र के रक्षक थे. फिर जेन जल्दी इधर-उधर देखने के लिए निकल पड़ीं.

उनके जीवन का काम शुरू होने वाला था.

अध्याय 3

जंगल में जीवन



1960 में, गोम्बे स्ट्रीम में रहना कैसा था?

तांगानिका झील के पूर्वी किनारे से स्टील के रंग के पहाड़ उठे थे. उन ढलानों के बीच की घाटियों में घने जंगल थे. वो इलाका पूरी तरह से जंगली था. वहां पर कोई पर्यटक नहीं थे, और न ही कैमरों के साथ कोई सफारी समूह, और वहां रहने के लिए कोई फैंसी लॉज भी नहीं थी. जेन एक छोटी सी नदी की धारा के पास के मैदान में, झील के पास ही रहती थी.

वो बाकी दुनिया से पूरी तरह कट गई थी. यहां तक कि किगोमा शहर भी, वहां से एक घंटे की नाव की सवारी दूरी पर था.

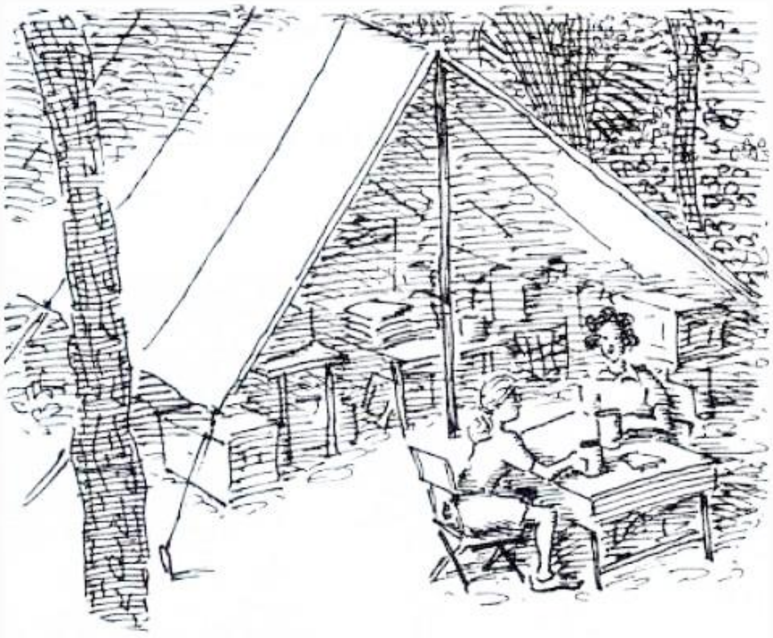
जेन के अलावा कैंप साइट में और कौन रहता था? डोमिनिक नाम का आदमी रसोइया होने के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति था.

जेन की मां, वन्ने.

वन्ने, गोम्बे में पहले चार महीने जेन के साथ आकर रहीं. माँ और बेटी एक पुराने सेना के तंबू में, एक साथ ही रहती थीं. तंबू में दो चारपाई और धोने के लिए एक अलग स्थान था. टेंट के दरवाज़े पर मच्छरदानी लगी थी. उनका शौचालय बाहर था. शौचालय एक बाड़ से घिरा हुआ, ज़मीन में एक गहरा छेद था.

वन्ने एक अधेड़ उम्र की महिला थीं. अगर उस तरह का जीवन जेन के लिए कठिन था; तो वो वन्ने के लिए तो वो दोगुना कठिन था. अफ्रीकी अधिकारियों ने जेन को अकेले गोम्बे जाने देने और रहने से मना किया था. वे अकेली रह रही एक युवती की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे.

पर वन्ने यह नहीं चाहती थीं कि जेन, चिम्पांज़ियों के साथ रहने के उस सुनहरे मौके को गंवाए.



पहले ही पचास साल के पार, वन्ने, अफ्रीका आने के लिए तैयार हुईं. अब यह देखना आसान था कि जेन की बहादुरी कहां से आई थी!

वन्ने शुरू के महीनों में जेन के साथ रहीं. वो जेन के लिए बहुत मायने रखता था. साथ में वो जेन की सबसे अच्छी दोस्त भी थीं! शाम को जब जेन शिविर में वापिस लौटती तो वन्ने वहां मौजूद होती थीं. वो रात का खाना इकठ्ठा खातीं और बतियातीं थीं. जब जेन अपने नोट्स लिखती तो वन्ने उसकी मदद के लिए हमेशा पास होती थीं.

सबसे पहले, जेन हाथ से कागज़ पर ही नोट्स लिखती थीं. बाद में उन्हें एक पोर्टेबल टाइपराइटर मिला.

जब जेन पूरे दिन भर खोजबीन में व्यस्त रहती थीं उस दौरान वन्ने तम्बू में क्या करती थीं?

वन्ने ने वहां एक छोटा सा क्लिनिक स्थापित किया था. उन्होंने स्थानीय लोगों को बुनियादी स्वास्थ्य सेवा प्रदान की. उन्होंने एस्पिरिन दी और लोगों के घावों को साफ किया. कभी-कभी उन्होंने प्रसव के दौरान बच्चों को जन्म देने में भी मदद की!



लगभग हर दो सप्ताह में एक बार, जेन और वन्ने दोनों, नाव से किगोमा जाते थे. शहर में, वो अगली यात्रा तक के लिए डाक और पर्याप्त भोजन और सप्लाई खरीदते थे. वे अंडे, बेक्ड बीन्स और सॉसेज का स्टॉक करते थे. फल और सब्जी वाले बाजार में, वो केले, हरे और पीले संतरे, और पैशन फ्रूट खरीदते थे.

दो अफ्रीकी स्काउट, जेन के कैंप से कुछ ही दूर झोपड़ियों में रहते थे. उनमें से एक हमेशा जेन और वन्ने के साथ किगोमा की यात्रा पर जाता था. दो गोरी महिलाओं का अकेले यात्रा करना उचित नहीं समझा जाता था!

स्काउट्स का मुख्य काम, जंगल में जेन का रास्ता खोजने में मदद करना था. उन जंगलों में चिम्पांज़ियों के घर थे. हालाँकि, जेन को स्काउट्स के साथ रहना पसंद नहीं था.

क्यों?

जंगल में अकेले व्यक्ति के मुकाबले दो लोगों से अधिक शोर होता था. और शोर, चिम्पांज़ियों को डरा देता था. साथ ही, स्काउट्स को, सुबह बहुत जल्दी उठकर जेन की तरह जंगल में जाना बिल्कुल पसंद नहीं था.



जेन हमेशा भोर से पहले उठती थी! अक्सर स्काउट्स, जेन के पहले ही कैंप में वापस लौटना चाहते थे. इसलिए कुछ समय बाद, स्काउट्स ने जेन को खुद ही अपना रास्ता तलाशने दिया. अब जेन अपनी गति से जंगल में विचरने के लिए स्वतंत्र थी.

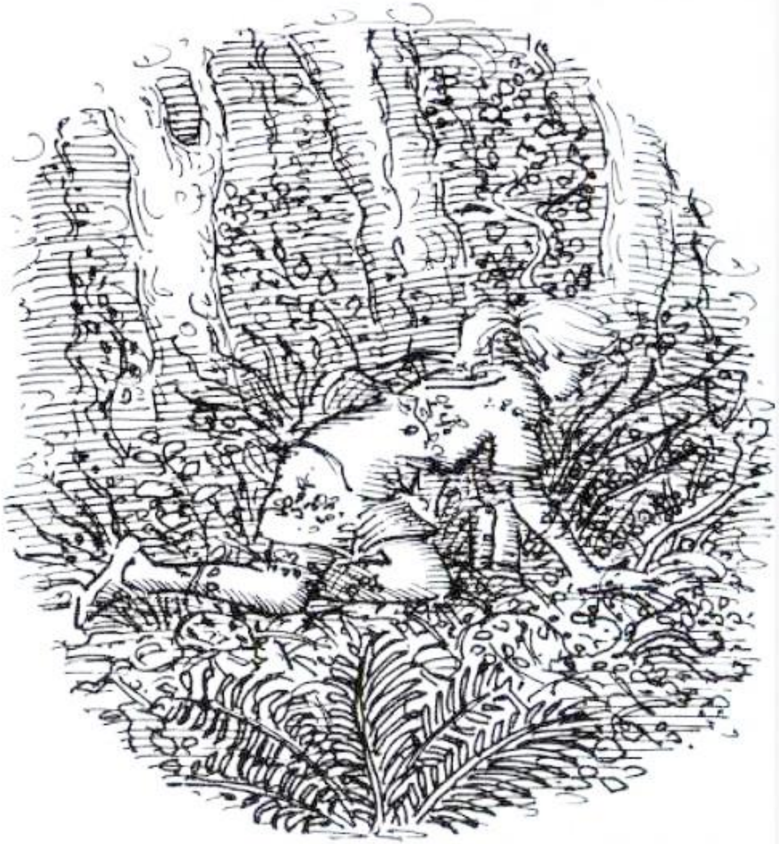


कभी-कभी वह जमीन पर बैठ जाती थी. कभी-कभी वह पेड़ों पर चढ़कर बैठ जाती थी. वो चाहती तो रात भर वहां रुक सकती थी. अब अकेले होने से चिंपैंजी उसे आसानी से नहीं देख सकते थे.

क्योंकि चिंपैंजी बहुत दूर थे, इसलिए जेन अपने साथ दूरबीन ले गईं.

वो अपने साथ एक टिन का डिब्बा भी लेकर गईं. उसमें एक स्वेटर, एक कंबल, कुछ खाना, कॉफी और एक मग था. जेन अपने बालों को, हमेशा एक पोनीटेल में बांधती थीं. और वो हर दिन एक ही पोशाक पहनती थीं - एक गहरे रंग की शर्ट और गहरे रंग का नेकर. रंग-बिरंगे कपड़े पहनने से वो चिम्पांज़ियों को आसानी से दिखाई देतीं.

जेन जंगल की पृष्ठभूमि के साथ घुलना-मिलना चाहती थी. अक्सर, उन्हें उलझी हुई लताओं में से होकर रेंगना पड़ता था. उन्हें मक्खियां काटती थीं और तेज घास उन्हें खरोंचती थी. लेकिन वो उन्हें रोक नहीं पाए. क्या जेन गुडॉल किसी बात से डरती थीं?



हां. वो तेंदुओं से डरती थीं. वो तेंदुओं की गंध को पहचानती थीं, और कई बार जेन ने जंगल में उनकी गंध को सूंघा भी. एक बार उन्हें तेंदुए से बचने के लिए एक पेड़ पर भी चढ़ना पड़ा. वो भाग्यशाली थीं : तेंदुआ उनके पीछे नहीं चढ़ा. इसकी बजाए, तेंदुए ने उस चट्टान पर टट्टी की, जहां जेन कुछ मिनट पहले ही बैठी थीं!





जेन अक्सर चिम्पांज़ियों को नहीं देख पाती थीं, फिर उन्हें यह कैसे पता चलता था कि उन्हें कहां देखना चाहिए?

जेन चिम्पांज़ियों की आवाज़ों को पहचानती थीं. जब वो कुछ रोने की आवाजें सुनती थीं तो उन्हें पता चल जाता था कि चिंपैंजी उस इलाके में थे. फिर जेन एक जगह चुनती थीं और वहां बैठ जाती थीं. वो घंटों रुककर, चुपचाप प्रतीक्षा करती और देखती थीं. किसी दिन उन्हें कोई चिम्पांजी नहीं दिखता था. फिर भी, जेन को यकीन था कि चिम्पांजी उन्हें देख रहे होते थे. अन्य दिन, उन्हें कई चिम्पांजी दिखाई देते थे. कभी-कभी कुछ बड़े नर चिम्पांजी इकट्ठे हो जाते थे. कभी-कभी वो बच्चे के साथ एक माँ चिम्पांजी को भी देखती थीं.

कभी-कभी उन्हें नर, मादा और युवा चिम्पांजी का एक बड़ा समूह भी दिखाई देता था.

बस एक परेशानी थी. चिंपाजी हमेशा उनसे बहुत दूर रहते थे. और वे कभी भी कोई दिलचस्प चीज़ नहीं कर रहे होते थे. जेन को एक-साथ चिम्पांज़ियों को खेलते हुए देखने की उम्मीद थी. वो एक माँ चिम्पांजी को अपने बच्चे की देखभाल करते हुए देखना चाहती थी. इसकी बजाए, जेन ने चिम्पांज़ियों को सिर्फ भोजन की तलाश करते हुए ही देखा.



वे अंजीर के पेड़ों पर चढ़ जाते थे और उसके फल तोड़ते थे. हालांकि, जैसे ही जेन उनके करीब जाने की कोशिश करती, चिंपैंजी वहां से भाग जाते थे.

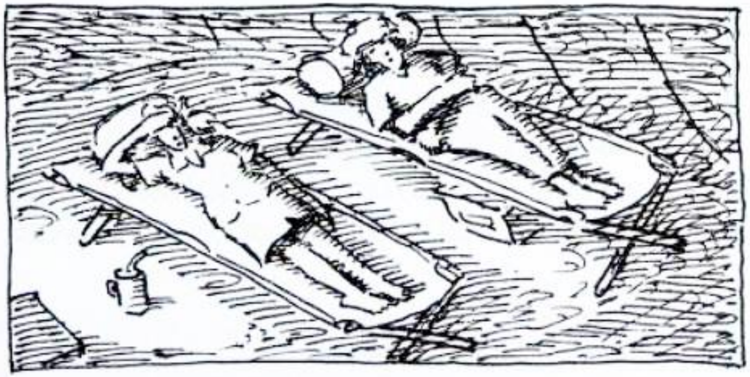
जेन भला कैसे, चिम्पांज़ियों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें सीखेगी?

अध्याय 4

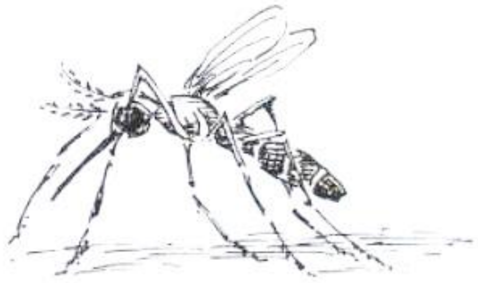
चिम्पांजी

जेन को इस बात से काफी निराश थी कि वो चिम्पांज़ियों के साथ बहुत ही कम प्रगति कर पा रही थीं. फिर, मामले को बदतर बनाने के लिए, वो और वन्ने दोनों बीमार पड़ गईं. बहुत बीमार. दोनों महिलाओं को मलेरिया होने की सबसे अधिक संभावना थी. उनके पास बीमारी के इलाज के लिए कोई दवा भी नहीं थी. जेन को बताया गया था कि गोम्बे में मलेरिया नहीं होता था, इसलिए वो उसकी दवा अपने साथ नहीं लाई थीं. जेन ने उसके लिए खुद को दोषी ठहराया!

दो हफ़्तों तक जेन और उसकी माँ ने अपना तंबू बिल्कुल नहीं छोड़ा. वो दिन भर बिस्तर पर लेटी रहती थीं और पसीने से तर-बतर होती रहती थीं.



मलेरिया



मादा मच्छर

मलेरिया दुनिया में सबसे व्यापक बीमारियों में से एक है. वो बीमारी लोगों को एक खास तरह के मच्छर के काटने से होती है. मलेरिया लीवर और रक्त कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है. इसके लक्षण होते हैं तेज बुखार, उल्टी, ठंड लगना और सिरदर्द.

अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में लोगों को मलेरिया का सबसे अधिक खतरा होता है. कीट-स्प्रे आदि घर के अंदर के मच्छरों को मार सकते हैं. दवाएं बीमारी का इलाज कर सकती हैं लेकिन अभी तक मलेरिया से बचाव के लिए कोई टीका नहीं बना है. हर साल एक लाख से अधिक लोग अभी भी मलेरिए से मरते हैं.

कई दिनों तक, वन्ने को 105 डिग्री तक बुखार चढ़ा रहा.

जेन और वन्ने दोनों भाग्यशाली थीं, वे ठीक हो गईं. जैसे ही उन्होंने अच्छा महसूस किया, जेन दुबारा जंगलों में लौटी.

आखिर उसका धैर्य रंग लाया. अक्टूबर का महीना था. वन्ने इंग्लैंड घर लौट गई थीं. जेन, अकेले अपने दम पर थीं. उसने उस इलाके की खोज शुरू की जिसे उसने "पीक" यानि चोटी कहा. हर दिन, चाहें बारिश हो या धूप, जेन चोटी के खड़े ढलान से जंगल में चढ़ जाती थी.

धीरे-धीरे, चिंपैंजी जेन को देखने के आदी हो गए. एक दिन जेन ने एक मादा को, एक नर चिम्पांजी का हाथ पकड़ते हुए देखा. नर ने उसके हाथ को चूमा! उसने दो चिम्पांजी को एक टहनी से रस्साकशी खेलते हुए भी देखा.

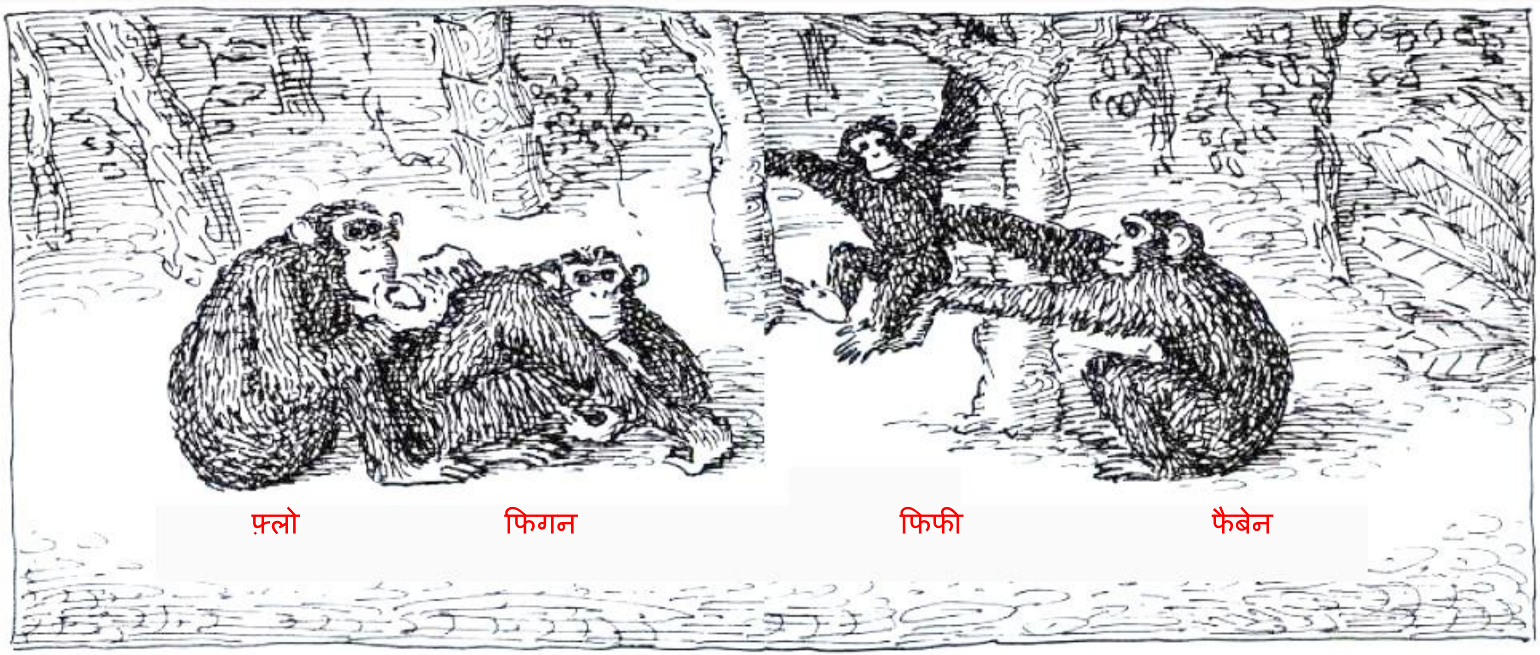


अब जेन कई चिम्पांजी को अलग-अलग बता सकती थी, और फिर उसने उन्हें नाम भी दिए.

फ़्लो एक बूढ़ी मादा चिम्पांजी थी. जेन को फ़्लो बहुत पसंद थी. वो एक बहुत लोकप्रिय चिंपांजी थी, हालांकि-जेन को फ्लो बहुत मजाकिया दिखती थी. उसकी बड़ी गोल नाक और फटे कान थे. फ़्लो का एक बच्चा भी था. जेन ने उसे फिफी बुलाया. और उसने फिफी के बड़े भाइयों को फैबेन और फिगन नाम दिए. फ़्लो एक देखभाल करने वाली अच्छी माँ थी. वो फिफी को बारिश से बचाती थी.

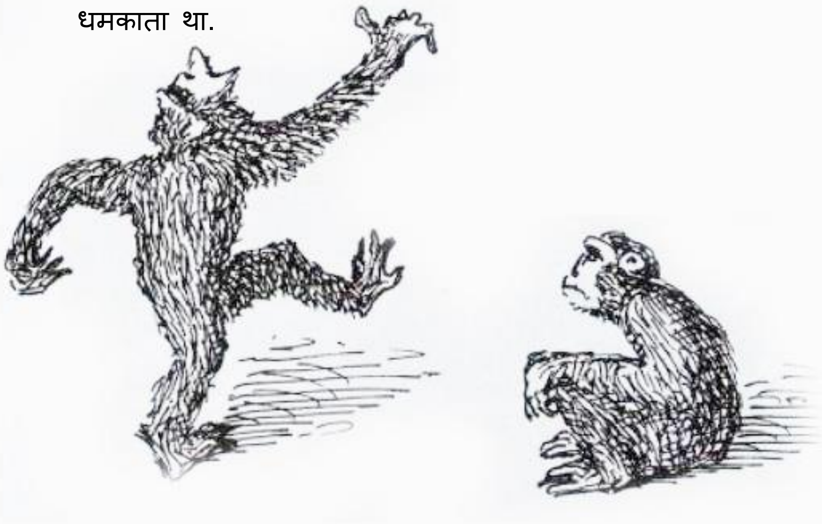
वो ध्यान से अपनी युवा बेटी को संवारती थी. (संवारने का अर्थ है फर को साफ करना.) फ़्लो एक चंचल माँ थी, लेकिन वो दृढ़ भी थी. वो अपने बच्चों को कभी लाइन से बाहर नहीं होने देती थी!

ऑयली, फ्लो की दोस्त थी. ऑयली भी एक मादा थी. उसका चेहरा बहुत लंबा था, और उसके होंठ हमेशा हिलते थे. एक और चिंपांजी—एक नर—काफी हद तक ऑयली जैसा दिखता था. जेन को पूरा यकीन था कि वो ऑयली का भाई ही होगा. जेन ने उसका नाम विलियम रखा.



जानवरों के अध्ययन में, जानवरों को आमतौर पर नंबर दिए जाते हैं, नाम नहीं. वास्तव में, कई वैज्ञानिक सोचते हैं कि जिन जानवरों का अध्ययन किया जा रहा है, उनको नाम देना एक बुरा विचार है. उन्हें इस बात की चिंता होती है कि कहीं उससे जानवर बहुत ज्यादा इंसानों जैसे न लगने लगें.

जेन निश्चित रूप से चिंपैंजी को इंसान नहीं मानती थी. लेकिन वो चिम्पांज़ियों को एक व्यक्ति के रूप में देखती थी. उनके अलग-अलग व्यक्तित्व थे. विलियम डरपोक और भयभीत था. गिल्का हर समय दिखावा करता था, और हमेशा दूसरों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता था. फ्रोडो, दादागिरी करता था, और बाकी को धमकाता था.



एक बार जेन, फ्रोडो को देख रही थी कि अचानक फ्रोडो ने उसके ऊपर आक्रमण किया. उसने जेन को पीटा और लात मारी.

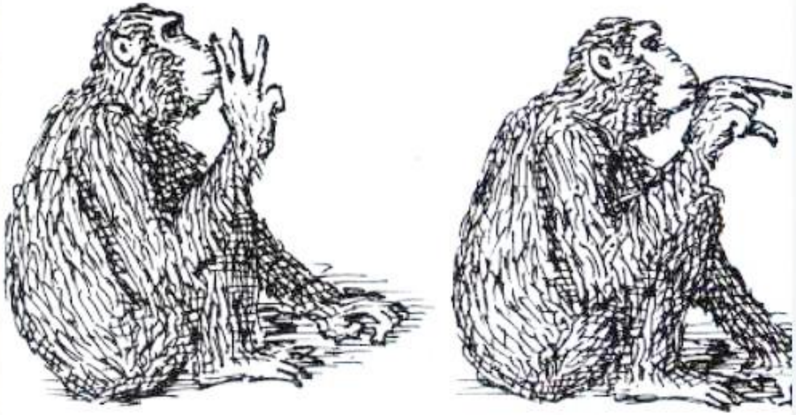
फिर फ्रोडो ने जेन को छोड़कर जाना शुरू किया, लेकिन वो फिर वापस आया, और उसने जेन को और अधिक पीटा. वो जेन को एक चट्टान के किनारे तक खींचकर ले गया. फिर फ्रोडो ने आगे क्या किया? उसने जेन को चट्टान के किनारे से धकेल दिया. वहां एक तेज ढलान था. लेकिन सौभाग्य से वहाँ झाड़ियाँ भी थीं जिन्होंने जेन को गिरने से रोका. फिर भी, फ्रोडो ने उस दिन जेन को बहुत बुरी तरह से पीटा था.



क्या चिम्प्स सीख सकते हैं?

कई सालों तक, वैज्ञानिकों ने चिम्प्स को इंसानों की तरह ही आवाज़ निकालना सिखाने की कोशिश की. लेकिन इसमें किसी को कोई सफलता नहीं मिली. चिम्प्स के "वोकल कॉर्ड" उनके लिए बोलना असंभव बना देते हैं.

फिर, 1966 में, दो शोधकर्ताओं ने कुछ अलग करने की कोशिश की. उन्होंने चिम्प्स को अमेरिकी "साइन लैंग्वेज" सिखाना शुरू की - वाशो नाम के एक दस महीने के चिम्प को. समय के साथ, वाशो ने लगभग 130 शब्दों के चिन्ह बनाना सीख लिए.



पानी के लिए चिन्ह + चिड़िया के लिए चिन्ह

मानव भाषा?

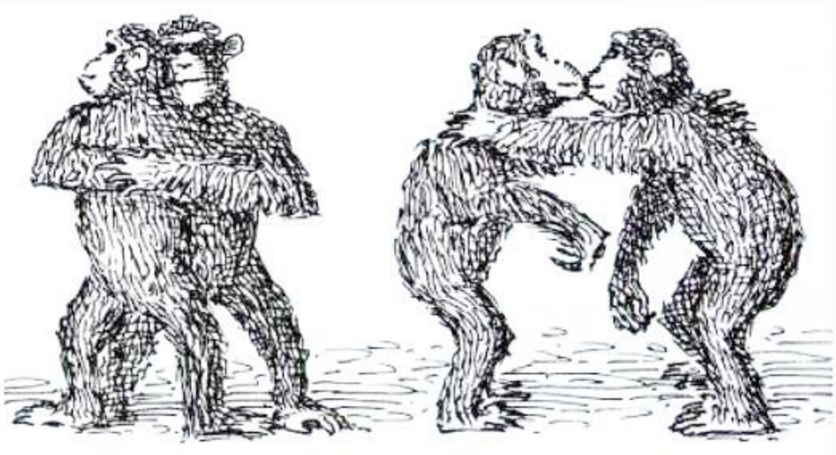
उसके शिक्षकों के अनुसार, वाशो खुद कोई शब्द भी "बना" सकता था जब उसे किसी चीज़ का संकेत नहीं पता होता था. एक हंस को देखकर वाशो ने पानी और चिड़िया दोनों के चिन्ह बनाए. क्या इसका मतलब यह था कि वाशो शब्दों को समझता था? निश्चित रूप से ऐसा ही लग रहा था. हालांकि, कई वैज्ञानिक उसे वास्तव में एक भाषा सीखने के रूप में नहीं मानते हैं. भाषा में वाक्य बनाना, व्याकरण का उपयोग करना और बातचीत करना शामिल होता है. कोई भी चिम्पांजी ऐसा कुछ नहीं कर सकता है.



हंस

कई मायनों में चिम्पांजी, इंसानों की तरह ही व्यवहार करते हैं. बोलने में असमर्थ होते हुए भी उनके पास संवाद करने का अपना तरीका होता है. जेन ने धीरे-धीरे चिम्पांज़ियों की अलग-अलग आवाज़ों - घुरघुराहट, हांफना और चीख का क्या मतलब होता था, वो सीखा. उदाहरण के लिए, चिम्पांजी एक-दूसरे से मिलते समय "नरम हाँफते" थे. एक निश्चित ज़ोर की चीख का मतलब होता था, मदद के लिए पुकार.

चिम्पांजी भी इंसानों की तरह ही इशारों से, भावनाओं को व्यक्त करते थे. वे एक-दूसरे को गले लगाते और चूमते थे. वे सम्मान दिखाने के लिए झुकते भी थे.



वो दोस्तों के आराम के लिए उनकी पीठ थपथपाते थे. गुस्सा दिखाने के लिए वो अपनी मुट्ठियों को हिलाते या पत्थर भी फेंकते थे. जेन को चिम्पांज़ियों को, अलग-अलग मनुष्यों जैसे नाम देना सही लगा.



डेविड ग्रेबियर्ड

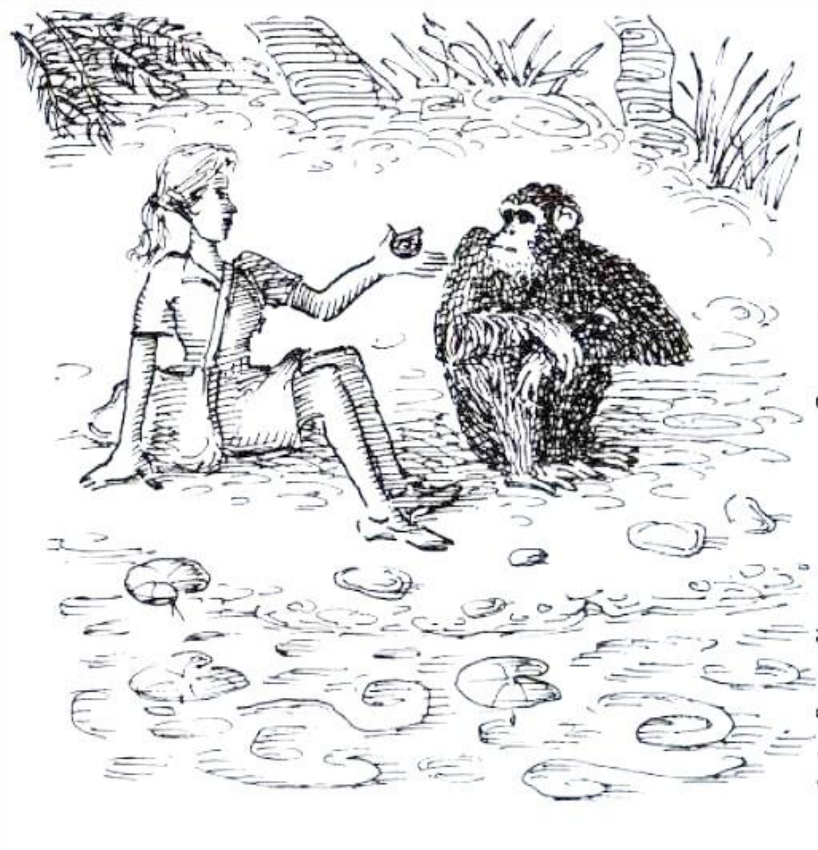
क्या जेन का कोई पसंदीदा चिंपांजी था?

हां!

जेन ने उसे डेविड ग्रेबियर्ड बुलाया, क्योंकि उसकी ठुड्डी के चारों ओर चांदी जैसे सफ़ेद बाल थे. उन्होंने अपनी एक किताब में लिखा, "डेविड ग्रेबियर्ड की उन सभी में सबसे खूबसूरत आंखें थीं, बड़ी और चमकदार. उसकी आँखें उसके पूरे व्यक्तित्व को व्यक्त करती थीं."

डेविड ग्रेबियर्ड शांत स्वभाव के था और वो जेन से डरता नहीं था. वो पहला चिंपांजी था जिसने जेन को स्वीकार किया था. एक दिन, जेन ने डेविड ग्रेबियर्ड को फल का एक टुकड़ा दिया. ग्रेबियर्ड उसके पास आया, और उसने फल लिया, और फिर जेन का हाथ अपने हाथ में लिया.

जेन के लिए वो एक बेहद खास पल था!



डेविड ग्रेबियर्ड ने जेन गुडॉल को चिम्पांज़ियों के बारे में बहुत कुछ सिखाया.

लंबे समय तक वैज्ञानिकों का मानना था कि चिंपैंजी शाकाहारी होते थे. शाकाहारी वो जानवर होते हैं जो केवल फल और सब्जियां ही खाते हैं. वे मांस नहीं खाते हैं.

लेकिन एक दिन, जेन ने डेविड ग्रेबियर्ड और कई अन्य चिम्पांज़ियों को एक पेड़ की ऊपरी शाखाओं में देखा. वो किसी चीज को खा रहे थे. वो एक मरा हुआ सुअर निकला.

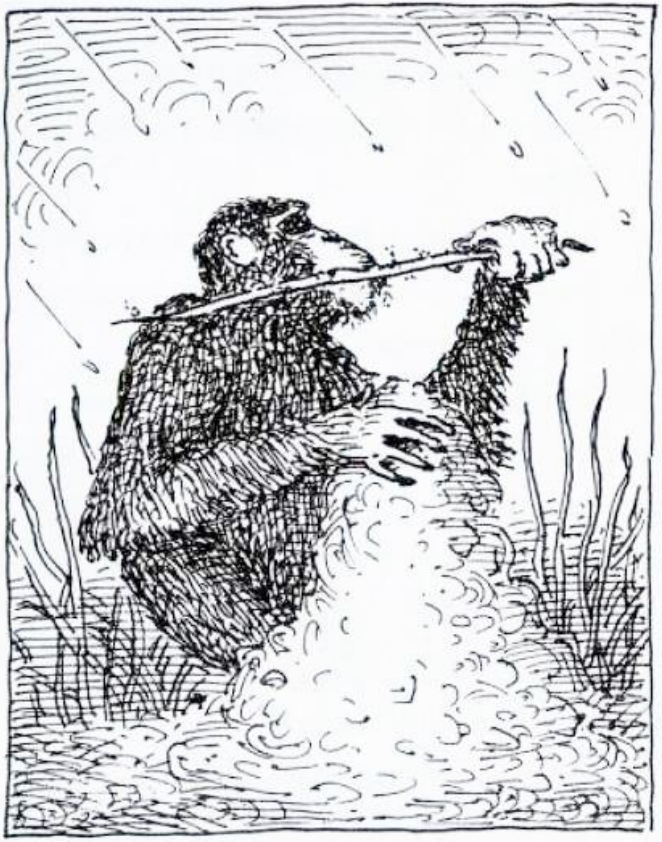


डेविड ग्रेबियर्ड, दूसरे चिम्पांज़ियों को मांस के टुकड़े पकड़ा रहा था. उसने उन्हें खुद भी मांस काटने दिया. तीन घंटे तक, चिम्पांज़ियों ने सुअर का भोजन किया. जेन ने जो देखा उससे उसने यह साबित किया कि, चिंपांजी सर्वाहारी होते हैं. वे मांस के साथ-साथ पौधों का भोजन भी खाते हैं.

यह दिलचस्प खबर थी. लेकिन कुछ हफ़्ते बाद, जेन ने डेविड ग्रेबियर्ड को एक बेहद आश्चर्यजनक काम करते हुए पाया.

वो भारी बारिश का दिन था. जेन थकी हुई थी और भीग गई थी. अपनी दूरबीन से उसने डेविड ग्रेबियर्ड को देखा. वो दीमकों के एक टीले के पास बैठा था. दीमक ऐसे कीड़े होते हैं जिन्हें चिंपैंजी खाना पसंद करते हैं. दीमक के टीलों में सबसे ऊपर एक छेद होता है. डेविड ग्रेबियर्ड दीमकों को बाहर निकालने के लिए घोंसले के छेद में, घास की एक लंबी सींक डाल रहा था. डेविड घास की सींक को, एक औज़ार के रूप में इस्तेमाल कर रहा था! इससे डेविड ग्रेबियर्ड स्वादिष्ट दीमक को टीले के बाहर निकालने और खाने में कामयाब रहा.

यह इतना अद्भुत क्यों था?



1960 तक, वैज्ञानिकों का मानना था कि केवल मनुष्य ही एक ऐसा जीव था जो उपकरण बनाने में सक्षम था. औज़ार बनाना शायद इतनी बड़ी बात न लगे, लेकिन ज़रा उसके बारे में सोचें.

एक कुत्ता अपने सामने के पंजों से एक छेद खोद सकता है. वो अधिक आसानी से गहरा छेद खोदने के लिए फावड़ा बनाना नहीं जानता है. उसके पंजे फावड़ा पकड़ भी नहीं पाएंगे.

औज़ार बनाने के लिए एक जानवर को एक बड़े, स्मार्ट दिमाग की जरूरत होती है. औजारों को पकड़ने के लिए किसी जानवर को अंगूठे वाले हाथों की आवश्यकता भी होती है.

चिंपैंजी का दिमाग बड़ा होता है. उनके पास अंगूठे भी होते हैं. फिर भी, वैज्ञानिकों ने यह नहीं सोचा था कि चिम्पांजी औजार बनाना जानते होंगे. लेकिन जेन ने डेविड ग्रेबियर्ड को ठीक वैसा ही करते देखा.



कुत्ते का पंजा

चिंपैंजी का हाथ

एक बार डेविड ग्रेबियर्ड के चले जाने के बाद, जेन घास के औजारों को करीब से देखने के लिए गई. जेन ने खुद घास की सींक को घोंसले में धकेलने की कोशिश की. निश्चित रूप से, उसने महसूस किया कि दीमक ने घास को पकड़ा था. जब उसने घास की सींक को बाहर निकाला, तो दीमक सींक से चिपके थे और अपने पैरों को चला रहे थे.



अपनी पुस्तक "रीज़न फॉर होप" में, जेन ने लिखा: "मैंने जो देखा था उस पर मेरे लिए विश्वास करना कठिन था. यह लंबे समय से सोचा गया था कि मनुष्य पृथ्वी पर एकमात्र प्राणी थे, जो औजारों का उपयोग और निर्माण करते थे." पर जेन के निरीक्षण ने यह साबित किया कि ऐसा नहीं था.

एक अन्य बार, जेन, डेविड ग्रेबियर्ड और गोलियथ नाम के एक बड़े, ताकतवर चिंपांजी से मिली. वे एक साथ दीमक पकड़ रहे थे. यदि कोई घास का तिनका टूट जाता तो वो उसकी जगह दूसरे घास के तिनकों का उपयोग करते थे. कभी-कभी वे पतली टहनियाँ उठाते थे और उपयोग करने से पहले उनके पत्ते हटा देते थे. शायद यह पहली बार में आश्चर्यजनक न लगे. लेकिन चिंपाजी टहनियों में लगातार बदलाव कर रहे थे ताकि वे औजार के रूप में उनसे बेहतर काम कर सकें.



चिम्पांजी पीने के पानी को सोखने के लिए पत्तियों के चबाये हुए गुच्छों को, स्पंज के रूप में भी इस्तेमाल करते थे. और वे पूरी पत्तियों को खुद को साफ करने के लिए इस्तेमाल करते थे.

जब जेन ने डेविड ग्रेबियर्ड की "दीमक पकड़ने" की खबर लुई लीकी को भेजी तो वो रोमांचित हो गए. लीकी जानते थे कि जेन गुडॉल को गोम्बे भेजकर उन्होंने सही करा था! लीकी ने जेन ने जो कुछ नया सीख था, उसका उन्होंने प्रचार किया. उसके बाद नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ने जेन को एक और साल के लिए गोम्बे में रहने के लिए तुरंत पैसा भेज दिया.

वो दुनिया का सबसे अच्छा उपहार था.

चिम्पांज़ियों और मनुष्यों में कितनी समान है?

यह जानकर आपको आश्चर्य हो सकता है, लेकिन मनुष्य, चिम्पांज़ी के काफी करीब होते हैं!

इंसान और चिंपैंजी एक जैसे क्यों होते हैं? इसका कारण यह है कि वे एक सामान्य पूर्वज से आते हैं -



मनुष्य चिंपांज़ी

वनमानुष जैसे प्राणी से, जो पृथ्वी पर चार से आठ लाख साल पहले कहीं रहता था. अगर आप मनुष्यों और चिम्पांज़ियों पर एक त्वरित नज़र डालें तो आपको उनमें कई समानताएं दिखाई देंगी.



समानताएं : मानव और चिंपांजी के चेहरे एक-जैसे होते हैं. वे अपनी उन भावनाओं को दिखाते हैं जिन्हें वे महसूस करते हैं, जैसे खुशी, दुख, और डर. इंसान और चिंपैंजी दोनों के हाथों में अंगूठे होते हैं.

वैसे चिम्पांजी या मानव की खोपड़ी के अंदर के मस्तिष्क को देखा नहीं जा सकता है. दोनों के पास अपने शरीर के आकार के हिसाब से एक बड़ा मस्तिष्क होता है. यही उन्हें एक स्मार्ट जीव बनाता है.

इंसानों और चिंपैंजी का डीएनए लगभग एक जैसा होता है. डीएनए किसी भी जानवर का मेकअप तय करता है. इंसानों और चिंपैंजी की प्रजातियों के बीच डीएनए में बस 1 प्रतिशत से थोड़ा अधिक अंतर होता है. फिर भी वो छोटा सा अंतर बहुत मायने रखता है. इससे पता चलता है कि चिम्पांजी अपना भोजन क्यों क्यों नहीं उगाते हैं और वे बोलने या कला या संगीत रचने में क्यों असमर्थ होते हैं. और हालांकि चिम्पांजी सरल औजारों का निर्माण करते हैं, वे कोई जटिल मशीनें नहीं बना सकते हैं और न ही इंसानों जैसे गहरे विचार सोच सकते हैं.

और यह एक अजीब तथ्य है: इंसानों के विपरीत, चिम्पांजी आंसुओं से नहीं रोते हैं.

अध्याय 5

ह्यूगो का आगमन



नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका चाहती थी कि दुनिया, जेन गुडॉल और गोम्बे के चिम्पांज़ियों के बारे में जाने.

पत्रिका उन पर यथाशीघ्र एक फोटो वाला लेख प्रकाशित करने की सोच रही थी. अगस्त 1963 में, जेन का पहला लेख पत्रिका में छपा. उसका शीर्षक था "माई लाइफ अमंग वाइल्ड चिंपैंजी".

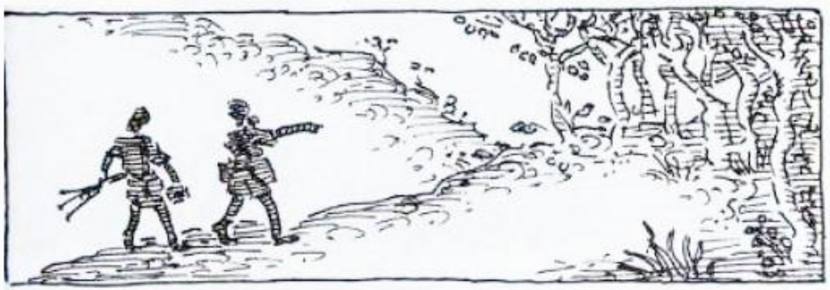
जेन पत्रिका के लिए खुद फोटो नहीं ले सकती थीं. चिम्पांज़ियों का दूरबीन से पीछा करना और नोट्स लेना वैसे ही काफी कठिन काम था. लेकिन जेन किसी फोटोग्राफर के अपने साथ ले जाने के लिए उत्सुक नहीं थी.

क्यों?

उन्हें डर था कि उससे उनके काम में बाधा पड़ेगी. चिम्पांजी, आखिरकार जेन को अपने बीच में आने दे रहे थे. जेन अब उनके बहुत करीब जाने में सक्षम थी - वे कभी-कभी जेन से केवल कुछ गज की दूरी पर ही होते थे. समय के साथ, डेविड ग्रेबियर्ड, जेन के कैंप में भी आने लगा. वो जेन से हाथ से कुछ केले लेता था. जल्द ही, अन्य चिम्पांजी भी कैंप में आने लगे. यदि कोई अजनबी अचानक दृश्य पर दिखाई देता, तो चिम्पांजी भयभीत हो जाते और वो दुबारा फिर जेन से छिपने लगते थे. फिर जेन का अर्जित किया सारा भरोसा, नष्ट हो जाता था.

जेन ने अपनी बहन जूडी को गोम्बे में शामिल होने का सुझाव दिया था. जूडी, फोटो खींच सकती थी. जेन और जूडी काफी हद तक दिखने में एक-जैसी दिखती थीं. जेन को लगा कि चिम्पांजी शायद उसकी बहन को स्वीकार कर लेंगे.

जूडी की कंपनी का होना बहुत स्वागत योग्य था. दोनों बहनें एक-साथ जंगलों में जाने लगीं.





जेन, चिम्पांज़ियों का निरीक्षण जारी रखती जबकि जूडी उनके फोटो लेती थी. परेशानी यह थी कि जूडी के फोटो पत्रिका के लिए पर्याप्त उत्तम नहीं थे.

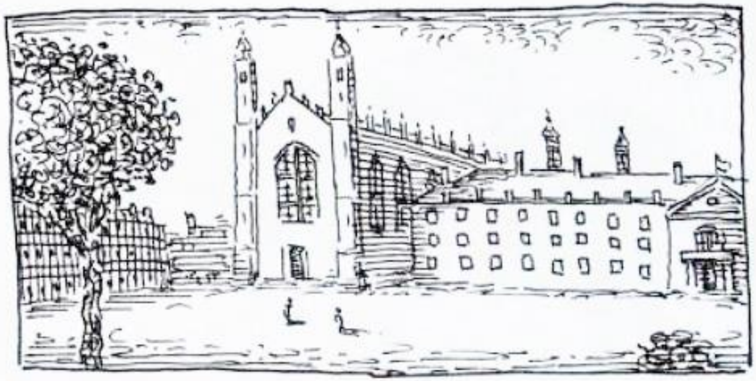
एक बार फिर, लुई लीकी ने जेन की मदद करने का एक तरीका खोजा. उन्होंने गोम्बे जाने के लिए नेशनल ज्योग्राफिक के लिए काम करने वाले एक युवा फोटोग्राफर की व्यवस्था की. उसका नाम ह्यूगो वैन लॉविक था. ह्यूगो की चिम्पांज़ियों के हर पक्ष में दिलचस्पी थी. और जेन इस बारे में गलतफहमी थी कि चिम्पांज़ियों की ह्यूगो को देखकर कैसी प्रतिक्रिया होगी. चिम्पांज़ियों को ह्यूगो के आसपास रहने में कोई आपत्ति नहीं थी. ह्यूगो, चिम्पांज़ियों ही घरेलू क्षेत्र में उनके फोटो लेने में सक्षम हुआ.

ह्यूगो ने चिम्पांज़ियों की तब फोटो ली जब उनमें से दो समूह के नेता बनने की लड़ाई लड़ रहे थे.

उसकी तस्वीरें शानदार थीं. 1963 में, नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका ने जेन और चिम्पांज़ियों के बारे में एक लेख छापा. उसके बाद पत्रिका ने उनके कई और लेख छापे.



लुई लीकी बहुत खुश थे कि इतनी प्रसिद्ध पत्रिका ने जेन के काम के महत्व को पहचाना था. हालांकि, लुई यह भी चाहते थे कि वैज्ञानिक दुनिया, जेन को चिम्पांज़ियों के विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार करे. पर सच्चाई यह थी कि जेन के पास कॉलेज की डिग्री तक नहीं थी. इसलिए, लुई लीकी ने जेन को, इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाने में मदद की.



कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय

कैम्ब्रिज दुनिया के बेहतरीन विश्वविद्यालयों में से एक था. भले ही वह कभी कॉलेज नहीं गई थीं, लेकिन जेन को एक ऊंची डिग्री के अध्ययन करने की अनुमति मिल गई. कैम्ब्रिज ने फैसला किया कि चिम्पांज़ियों के साथ जेन के काम को, एक कॉलेज की डिग्री के रूप में गिना जाएगा.

बेशक, कैम्ब्रिज में पढ़ाई का मतलब था कि जेन अफ्रीका से साल में कुछ समय के लिए दूर रहेंगी. पर जेन के लिए अपने प्रिय चिम्पांज़ियों से दूर रहना काफी कठिन था. लेकिन 1965 तक जेन ने अपनी डॉक्टरेट की डिग्री के लिए सारा शोधकार्य पूरा कर लिया था. वो अब डॉ. जेन गुडॉल थीं.



ह्यूगो वैन लॉविक



ह्यूगो वैन लॉविक का जन्म 10 अप्रैल, 1937 को इंडोनेशिया में हुआ था. उसका परिवार एक कुलीन डच परिवार था. ह्यूगो एक बैरन था!

जेन की तरह, ह्यूगो बचपन से ही जानवरों की दुनिया से मोहित हो गया था. वो भी जंगली जीवों के बारे में और जानने के लिए उनके बीच रहना चाहता था. जेन ने जो कुछ भी देखा उसके उसने नोट्स लिए. ह्यूगो ने हालांकि, फोटो और फिल्म के ज़रिये वो सब कुछ रिकॉर्ड किया. 1959 में, ह्यूगो ने एक डच फिल्म कंपनी के लिए काम करने के लिए केन्या की यात्रा की.

1962 तक, ह्यूगो नेशनल जियोग्राफिक पत्रिका के लिए पूर्वी-अफ्रीका को कवर कर रहा था. सोसायटी की पत्रिका ने उन्हें गोम्बे भेजा. उसे उन चिम्पांज़ियों के समूह की फोटो लेनी थीं जिनका जेन गुडॉल अध्ययन कर रही थीं.

ह्यूगो, तंजानिया में रहने लगा और उसने अपने जीवनकार्य को वहीं जारी रखा. चिम्पांज़ियों के अलावा, उसे उस क्षेत्र के अन्य जानवरों - गोल्डन जैकल्स, लकड़बग्घा और तेंदुओं में भी रुचि थी. ह्यूगो ने अपने टेलीविज़न शो के लिए, आठ एमी सहित कई अन्य पुरस्कार जीते.

ह्यूगो वैन लॉविक अफ्रीका में, चालीस से अधिक वर्षों तक रहा. उनमें से तीस उसने एक तंबू में ही रहकर बिताए. 2002 में मृत्यु के बाद उसे तंजानिया में ही दफनाया गया - उस भूमि में, जिससे वो असीम प्यार करते थे.

अध्याय 6

यश

ठीक उसी समय, जेन और ह्यूगो वैन लॉविक घनिष्ठ मित्र बन गए. उनके व्यक्तित्व बहुत अलग-अलग थे. ह्यूगो, जेन की तुलना में अधिक सख्त, अधिक औपचारिक थीं. वैसे उन दोनों ने एक-दूसरे के साथ मिलकर बहुत अच्छा काम किया. उनकी टीम एक अच्छी टीम थी. हर रात वे उत्साह से बात करते थे कि उन्होंने चिम्पांज़ियों को क्या करते हुए देखा था. समय के साथ, ह्यूगो और जेन में प्रेम हो गया. लंदन में 28 मार्च 1964 को उनकी शादी हुई. शादी के केक के ऊपर, डेविड ग्रेबियर्ड का एक छोटा सा मिट्टी का मॉडल रखा था.



दीवारों पर डेविड और गोलियथ, फ़्लो और उसकी बेटी फ़िफ़ी, और जेन और ह्यूगो के अन्य चिम्पांजी "दोस्तों" की तस्वीरें टंगी थीं.

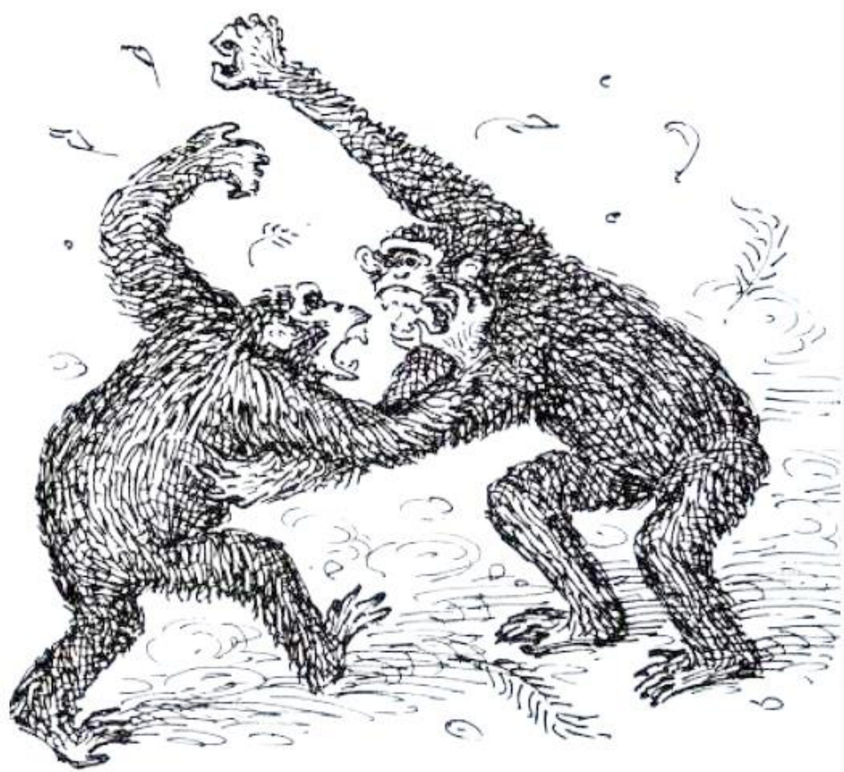
नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ने जेन के काम के लिए और पैसा मुहैया कराया. समय के साथ, कैंप बढ़ता गया. कई युवा स्नातक छात्र गोम्बे में जेन के साथ शामिल होने के लिए आए. 1965 में, कुछ नई इमारतों का निर्माण किया गया, फिर जंगल जैसा दिखने के लिए उन इमारतों को घास से ढक दिया गया.

चिम्पांजी समुदाय के बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठी की गई. उदाहरण के लिए, गोम्बे से पहले, वैज्ञानिकों ने सोचा था कि कोई चिंपैंजी समूह, एक नर और बहुत सारी मादाओं से मिलकर बनाता था.

पर ऐसा नहीं था.

कोई समूह कई नरों और मादाओं का बना होता था. जिस समूह को जेन जानती थीं, उसमें लगभग पचास चिंपांज़ी थे. वो समूह एक घरेलू सीमा के भीतर रहता था. एक वयस्क नर हमेशा समूह का नेता होता था और वो उस काम को दस साल तक संभाल सकता था. जब नेता बहुत बूढ़ा और कमजोर हो जाता था, तो अक्सर युवा नर अगला नेता बनने के लिए एक-दूसरे से लड़ते थे.

जब जेन पहली बार गोम्बे गईं तो गोलियथ समूह का नेता या अल्फा-नर था. बाद में, गोलियथ का स्थान माइक नाम के एक चिम्पांजी ने लिया. माइक कोई बड़ा, ताकतवर चिम्पांजी नहीं था. लेकिन वो चतुर था. वो बड़ा और मजबूत होने का नाटक करता था जिससे दूसरे नर उससे डरते थे और उसका सम्मान करते थे.



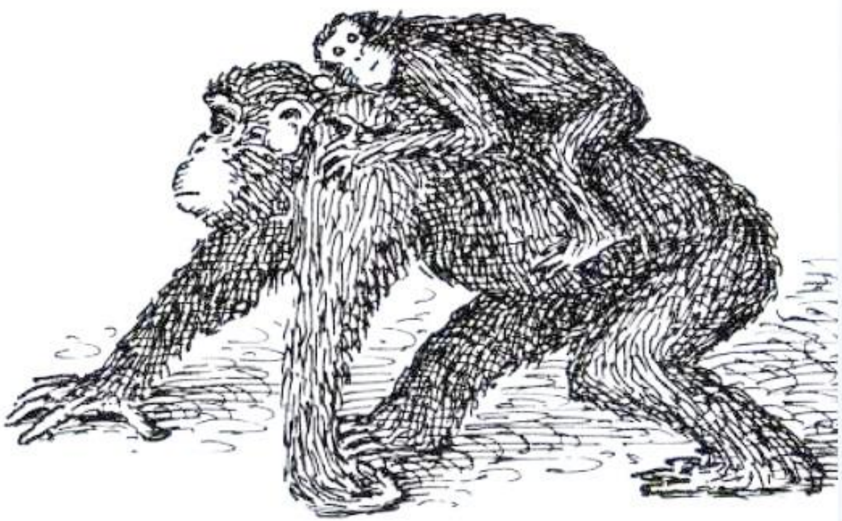
मादाओं में फ़्लो सबसे अधिक सम्मानित थी. 1964 में, उसका एक और बच्चा हुआ. जेन और ह्यूगो ने उसे फ्लिंट नाम दिया. उन्हें यह पता नहीं था कि फ्लिंट का पिता कौन था. नर और मादा चिंपैंजी जोड़ी बनाकर, एक-साथ नहीं रहते हैं. न ही कोई नर चिंपैंजी, अपने बच्चे के लालन-पालने में कोई हिस्सा लेता है. चिम्पांजी की माँ ही, बच्चों की देखभाल करती है.

फ़्लो अक्सर अपने नए बच्चे के साथ कैंप में आती थी. इसलिए कोई शिशु चिम्पांजी कैसे विकसित होता है उसे जेन करीब से देख पाई.

नवजात मानव शिशु की तरह ही, नवजात चिंपांजी भी, एकदम असहाय होता है. फ्लिंट, दूध के लिए, अपनी सुरक्षा के लिए और उसे इधर-उधर ले जाने के लिए पूरी तरह फ़्लो पर निर्भर था. पहले पांच या छह महीने, फ्लिंट अपनी मां के पेट के फर से ही चिपका रहा. बाद में, फ़्लो ने उसे अपनी पीठ पर बिठाया. जब चिम्पांजी एक वर्ष के हो जाते हैं, तब तक वे तेजी से चल सकते हैं. लेकिन चिंपैंजी अपनी मां की सवारी तब तक करते हैं जब तक वे दो साल के नहीं हो जाते. उसके बाद वे अकेले यात्रा करते हैं, फिर भी वे अपनी मां के करीब ही रहते हैं.

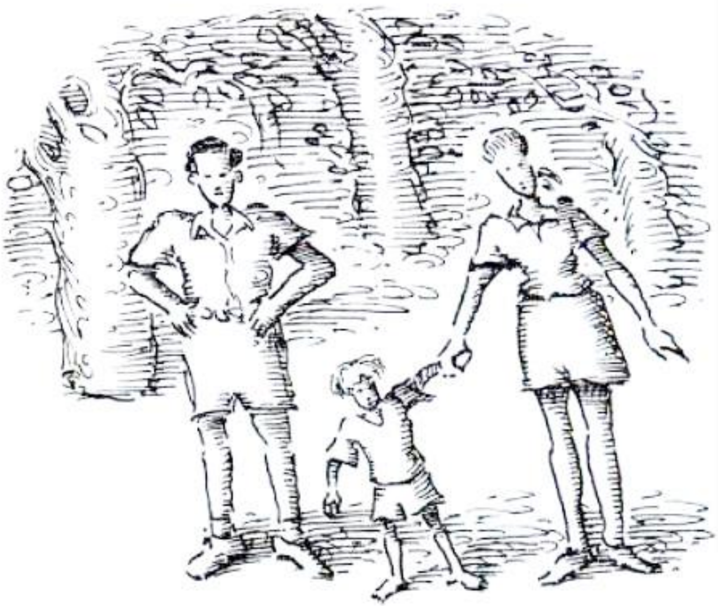
फ्लिंट के दो बड़े भाई थे, फिगन और फैबेन. जब उनका जन्म हुआ तब उनकी बहन फ़िफ़ी चार साल की थीं. फ़िफ़ी नन्हे फ्लिंट पत्थर पर मोहित थी. वो हर समय उसके आसपास ही रहना चाहती थी. जब वो कुछ बड़ा हुआ, तो फ़िफ़ी उसे पकड़कर अपनी पीठ पर बिठाकर घुमाने ले जाती थी. फ़िफ़ी भी माँ बनना सीख रही थी!

फ़्लो एक बेहतरीन माँ थी. वास्तव में, गोम्बे की अधिकांश मादा चिम्पांजी माएँ अच्छी थीं. वे अपने बच्चों को अपने बहुत करीब रखती थीं.





चिम्पांजी माएँ अपने बच्चों को ढेर सारा प्यार देती थीं और और उनका ध्यान रखती थीं. वो अपने बच्चों को गले लगाती थीं. वो उनकी रक्षा करती थीं. माएँ अपने बच्चों को दुर्व्यवहार के लिए दंडित नहीं करती थीं. उसकी बजाए, एक चिम्पांजी माँ अपने बच्चे के शरारती व्यवहार को रोकने के लिए उसका ध्यान किसी दूसरी चीज़ की ओर आकर्षित करती थी. वे अपने बच्चों को खेलने का भरपूर समय देती थीं. छोटे चिम्पांजी एक-दूसरे का पीछा करते, गुदगुदी करते और रस्साकशी जैसे खेल, खेलते थे.





जेन का मानना था कि चिम्पांज़ियों को देखने से उन्हें खुद अच्छी मां बनने के बारे में बहुत कुछ पता चला. 1967 में, उनका और ह्यूगो का एक बेटा हुआ. उनका पहला नाम भी ह्यूगो ही था, लेकिन सभी लोग उसे "ग्रब" बुलाते थे.

जेन के बच्चा होने के बाद अब सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण प्रश्न पैदा हो गया. कोई भी मानव बच्चा, चिंपैंजी के आसपास सावधान रहना नहीं जानता है. और चिम्पांजी, मानव शिशुओं पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं. इसलिए जेन और ह्यूगो ग्रब को सुरक्षित रखने के लिए झील के किनारे एक घर में चले गए. जेन ने अपना अधिकांश समय ग्रब की देखभाल करने में बिताया, जबकि उनके छात्र जंगलों में, चिंपैंजी निरीक्षण करने जाते थे.

छोटे ग्रब को, झील में तैरना और मछली पकड़ना पसंद था.



क्या ग्रब अपने माता-पिता की तरह ही चिम्पांज़ियों से उतना ही प्यार करने लगा था?

नहीं!

जब ग्रब काफी छोटा था, तब एक चिम्पांजी ने उसकी उंगली काट ली. ग्रब उसे कुछ खाना देने की कोशिश कर रहा था. उसके बाद ग्रब ने सभी जानवरों से अपनी दूरी बनाई.

इस बीच, जेन और ह्यूगो ने साझेदार के रूप में काम करना जारी रखा. उन्होंने एक साथ किताबें लिखीं और एक-साथ कई फिल्में भी बनाईं. जेन ने खुद कई किताबें लिखीं जो बहुत लोकप्रिय हुईं. एक किताब, "इन द शैडो ऑफ मैन", पहली बार 1971 में प्रकाशित हुई. वो एक बेस्ट सेलर बन गई और उसका लगभग पचास भाषाओं में अनुवाद हुआ.

दिसंबर 1965 में, अमेरिका में राष्ट्रीय टीवी पर एक घंटे का कार्यक्रम दिखाई गया. उसका नाम "मिस गुडऑल और वाइल्ड चिम्पांज़ीस" था. दर्शक चिम्पांज़ियों को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे. वे सुंदर, युवा जेन गुडॉल पर भी समान रूप से मोहित होते थे. जेन अब बहुत प्रसिद्ध हो गईं थीं.



कुछ वर्षों में, जेन विश्व प्रसिद्ध हो गईं. शायद ह्यूगो के लिए किसी सुपरस्टार से शादी करना मुश्किल था. हालांकि वे दोस्त बने रहे, शादी के दस साल बाद, ह्यूगो और जेन का तलाक हो गया.



डेरेक ब्रायसन

जेन ने 1975 में दोबारा शादी की. उनके दूसरे पति का नाम डेरेक ब्रायसन था. वो तंजानिया की सरकार में काम करते थे और ज्यादातर समय दार-एस-सलाम शहर में रहते थे. हालाँकि यह जोड़ा अक्सर अलग ही रहता था, लेकिन जेन के कई दोस्त डेरेक को, जेन ने जीवन का सच्चा प्रेमी मानते थे. 1980 में कैंसर से डेरेक की मृत्यु हो गई.

अध्याय 7

काले साल

चिड़ियाघरों में, चिंपाजी पैंसठ साल तक जीवित रह सकते हैं. जंगली में, वे लगभग चालीस या पचास साल तक नहीं जीते हैं.

क्यों?

जंगल में जीवित रहना बहुत कठिन होता है. शिशुओं के लिए सबसे कठिन समय होता है. बबून हमला कर सकते हैं और उन्हें मार सकते हैं. कुछ वर्षों में, उन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है. जंगली चिम्पांजी, निमोनिया या फ्लू जैसी बीमारियां भी पकड़ लेते हैं, जिनसे चिड़ियाघर के चिम्पांजी सुरक्षित रहते हैं.



बबून्स

1966 में, गोम्बे के जंगल में, पोलियो का प्रकोप फैल गया. उसने कई चिंपांजी को मार डाला और कईयों के हाथों को अपंग बनाकर छोड़ा. (पोलियो एक ऐसी बीमारी है जो इंसानों को भी हो सकती है, लेकिन 1950 के दशक से इसकी रोकथाम के लिए एक टीका बनाया गया था).

फ़्लो, पोलियो से बचने में कामयाब रही. लेकिन अगस्त 1972 में बुढ़ापे ने उसे जकड़ लिया. जेन ने अपने परिवार को फ़्लो की मृत्यु के बारे में एक पत्र लिखा. इसमें उसने कहा, "मैं उसे ग्यारह साल से जानती थी और मैं उससे प्यार करती थी." जेन ने लंदन के संडे-टाइम्स अखबार में फ़्लो के बारे में भी लिखा.

यह पहली बार था कि किसी जानवर के ऊपर एक बड़े अखबार में एक मृत्युलेख छपा था. जब उसकी मृत्यु हुई तो फ़्लो शायद पचास साल की थी.



उसका सबसे छोटा बेटा फ्लिंट, तब तक साढ़े आठ साल का था. वो ताकतवर था और अब युवा बन चुका था.

लेकिन फ्लिंट के लिए, फ़्लो के बिना जीवन असहनीय हो गया था. मृत्यु के तीन दिन बाद, जेन ने फ्लिंट को, फ्लो के खाली घोंसले को घूरते हुए देखा.

फ्लिंट ने खाना बंद कर दिया. उसने समूह के साथ घूमना भी बंद कर दिया. इसके बजाय, वो उसी स्थान पर रुका रहा जहां फ़्लो की मृत्यु हुई थी. वो जल्द ही बीमार पड़ गया. फ्लिंट की मदद के लिए जेन या उनके छात्र, कुछ भी नहीं कर सकते थे. 15 सितंबर को फ्लिंट का निधन सबके लिए दिल दहला देने वाला था.



2012 में, टेलीविज़न शो "60 मिनट" पर जेन ने कहा कि पहले तो उसने सोचा था कि चिम्पांजी इंसानों की तरह होते हैं, "शायद लोगों से भी अच्छे." जब उसने ऐसा कहा था तो शायद उसके दिमाग में फ़्लो और डेविड ग्रेबियर्ड जैसे चिंपांज़ी थे. हालांकि, जेन जितनी देर चिम्पांज़ियों के बीच रही, उतना ही उसने पाया कि उनके बारे में उसके कुछ शुरुआती विचार काफी गलत थे. इंसानों की तरह ही चिम्पांज़ियों में भी, एक बहुत ही गहरा और हिंसक पक्ष होता है.

1974 में, चिम्पांजी समुदाय के भीतर एक युद्ध छिड़ गया. कुछ साल पहले, गोम्बे के चिंपाजी दो समूहों में विभाजित हो गए थे. दोनों ग्रुप होम रेंज में रहे. लेकिन वे उसके अलग-अलग हिस्सों में रहे.

युद्ध तब शुरू हुआ जब एक समूह के छह नर चिम्पांज़ियों ने, दूसरे समूह के एक नर चिंपैंजी पर हमला किया. उन्होंने उस चिंपैंजी को बेरहमी से पीटा और उसे मरने के लिए छोड़ दिया. हमले लगभग तीन साल तक चले, जब तक कि एक समूह का लगभग सफाया नहीं हो गया. जेन ने नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका के मई 1979 के अंक में उन लड़ाइयों के बारे में विस्तार से लिखा.

और फिर पैशन थी.

जेन ने पैशन को भी सालों तक देखा. लग रहा था कि जैसे पैशन में दया का एक अंश भी नहीं था. पैशन ने अपनी बेटी पोम की भी उपेक्षा की. छोटी पोम को अपनी माँ का ध्यान आकर्षित करते हुए देखना एक बेहद दयनीय दृश्य था.



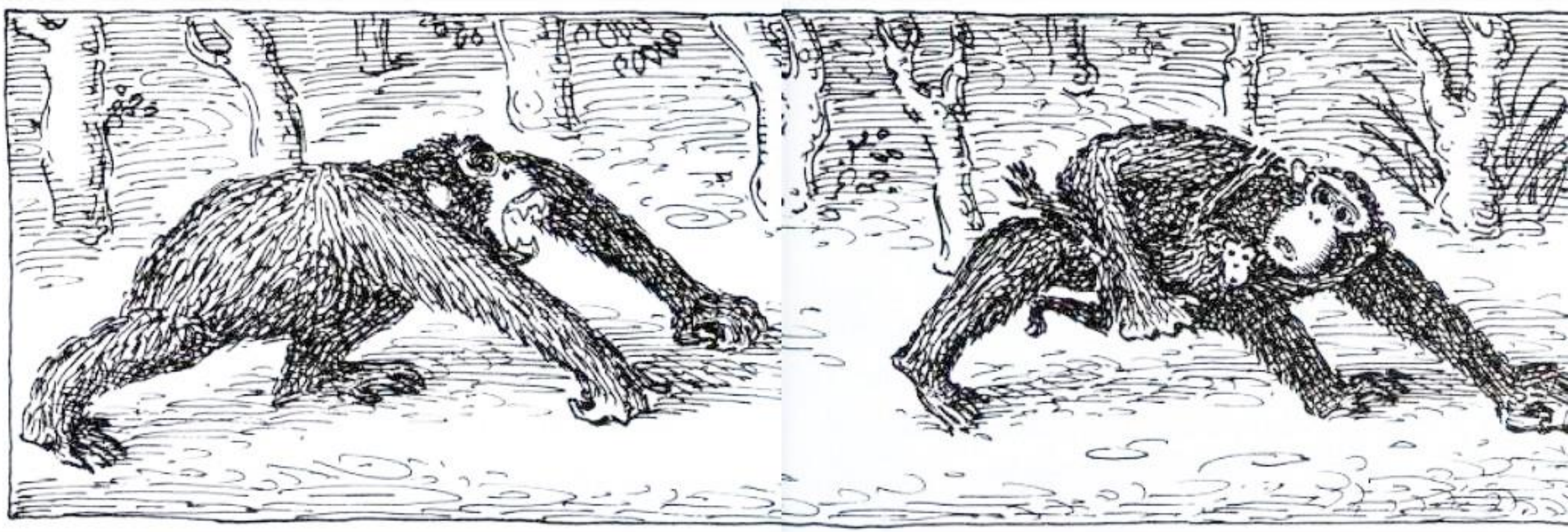
लापरवाही एक अलग बात थी. लेकिन 1974 में, पैशन ने कुछ इतना भयानक किया कि गोम्बे के शोधकर्ता भी वो देखकर दंग रह गए.

जेन शिविर से दूर थी, और उसने लौटने पर ही वो कहानी सुनी.

गिल्का ने हाल ही में एक नवजात बेटी को जन्म दिया था. फ़्लो की तरह गिल्का भी एक प्यारी माँ थी. वो धूप में बैठी थी, अपने नन्हे नवजात शिशु को पाल रही थी, तभी अचानक पैशन प्रकट हुई. बिना किसी चेतावनी के, उसने गिल्का पर आक्रमण किया. गिल्का ने भागने की कोशिश की, लेकिन पोलियो ने उसका एक हाथ अपंग बना दिया था. वो ज्यादा तेज नहीं दौड़ पाई. पैशन ने गिल्का के बच्चे को छीन लिया, और उसे मार डाला. फिर उसने उस बच्चे का भोजन किया और उसकी आखिरी बोटी तक चबाई.

चिंपांज़ी बच्चों के अचानक गायब होने के कई मामले सामने आए थे. फिर जेन को लगा कि शायद पैशन ने उन्हें भी मार डाला होगा. उसने ऐसा व्यवहार क्यों किया? जेन के पास उसका कोई जवाब नहीं था. लेकिन पैशन की हरकतों ने जेन को चिम्पांज़ियों के बारे में अपना सोच बदलने के लिए मजबूर कर दिया.

अगले वर्ष मई 1975 में कैंप में एक और भयानक घटना घटी. इस बार उसमें चिम्पांजी शामिल नहीं थे.





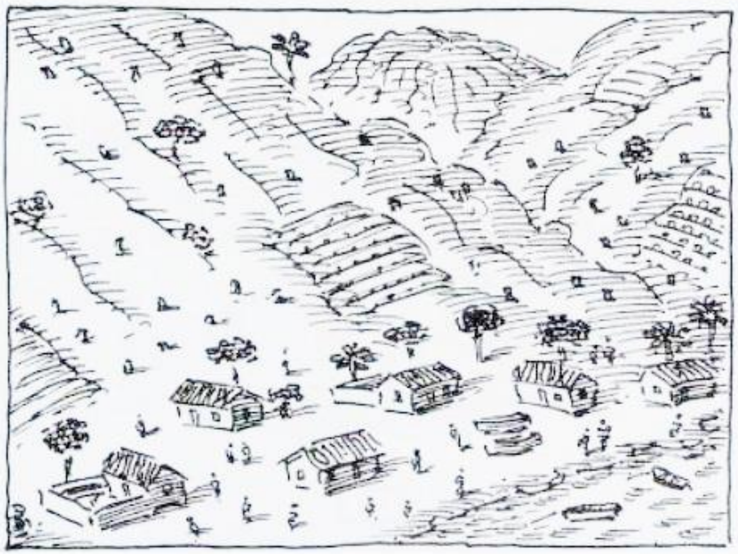
हथगोले और बंदूकों से लैस, पुरुषों का एक समूह गोम्बे में आया और उसने चार छात्रों का अपहरण किया. उन्होंने अपनी आजादी के लिए पैसों की मांग की. फिर फिरौती का भुगतान किया गया, और सभी छात्र सकुशल लौट आए. लेकिन उसके बाद, गोम्बे में कोई और विदेशी छात्र नहीं रहे. उनकी बजाए, तंजानिया के प्रशिक्षित फील्ड स्टाफ ने, अमेरिकी और यूरोपीय शोध छात्रों का काम किया.

ग्रब अब बड़ा हो रहा था. उसने स्कूल के साल इंग्लैंड में बिताए. ग्रब के बिना जेन को बहुत अकेला लगता था. जेन अब गोम्बे में कम समय बिताने लगी. उनके काम की प्रकृति भी अब बदल रही थी.

1977 में, "जेन गुडॉल इंस्टिट्यूट" की स्थापना हुई. उसका लक्ष्य गोम्बे में चिम्पांजी का अध्ययन जारी रखना और उनकी रक्षा करना था, साथ-ही-साथ अन्य जंगली जानवरों की भी रक्षा करना था.

फिर, 1986 में, जेन ने, चिमपंजियों का अध्ययन करने वाले अन्य वैज्ञानिकों के साथ एक सम्मेलन में भाग लिया. उन्होंने एक चिंताजनक मुद्दे पर चर्चा की. अगर कदम नहीं उठाए गए, तब जंगली चिम्पांजी विलुप्त हो सकते थे. फिर एक दिन इन अद्भुत जीवों में से कोई भी नहीं बचेगा.

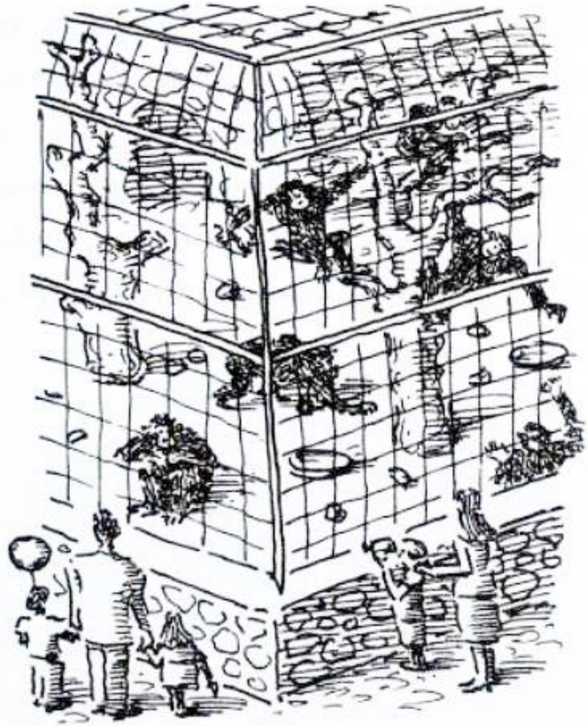
क्यों?



गांवों के लिए रास्ता बनाने के लिए चिम्पांज़ियों के जंगली घरों को नष्ट किया जा रहा था. इसका मतलब था कि चिम्पांज़ियों को खाने को भी कम खाना मिलता था और उन्हें घूमने के लिए कम जमीन उपलब्ध थी. अफ्रीका में जब जेन पहली बार पहुंची तो लगभग दस लाख चिंपांजी थे. तीस साल बाद, यह संख्या घटकर लगभग तीन लाख रह गई थी.

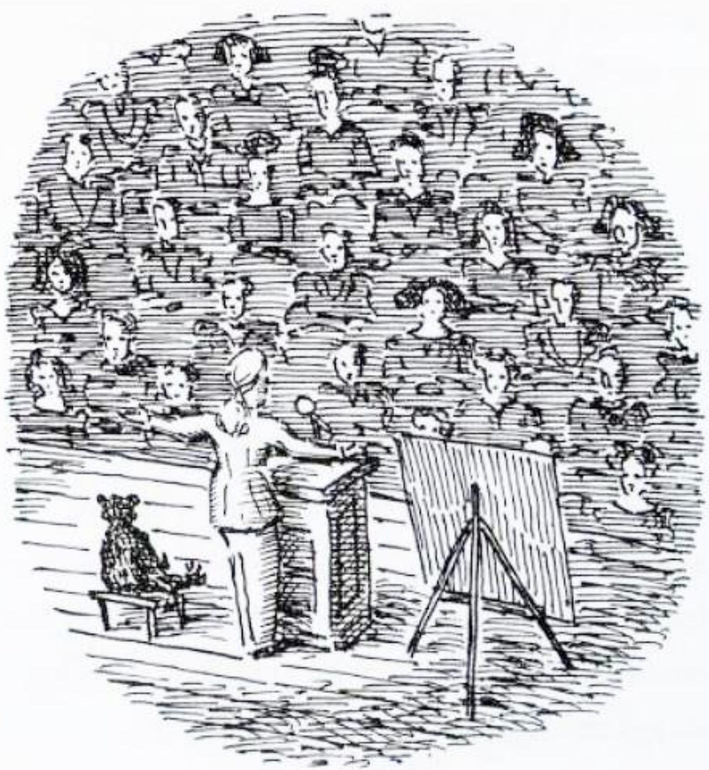
जेन ने TACARE (टेक-केयर) नामक एक कार्यक्रम शुरू किया. उसके माध्यम से अफ्रीका में काटे गए जंगलों को फिर से बहाल करने के लिए दस लाख से अधिक पेड़ लगाए गए. TACARE चिम्पांजी समूहों के पास रहने वाले लोगों को, उनके जीवन को बेहतर बनाने में भी मदद करता है.





जेन की एक अन्य परियोजना, CHIMPANZOO (चिम्पांज़ू), चिड़ियाघरों में चिम्पांजी के जीवन को बेहतर बनाने के लिए शुरू की. जेन ने देखा कि चिम्पांज़ियों को बड़े स्थानों और पिंजड़ों की आवश्यकता थी जो जंगल में चिम्पांज़ियों के घरों की तरह हों. जेन ने उन प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया जो चिम्पांज़ियों के साथ काम करती थीं और उन प्रयोगशालाओं के खिलाफ आवाज़ उठाती थीं जो जानवरों के साथ दुर्व्यवहार करती थीं.

आज भी जेन का तंजानिया में एक घर है. ग्रब और उसके बच्चे उसके ठीक बगल में ही रहते हैं. लेकिन जेन साल में केवल दो बार ही छोटी यात्राओं के लिए गोम्बे जाती हैं. वो साल में तीन सौ दिन दुनिया भर में घूमने में बिताती है, और लोगों को उन कारणों से अवगत कराती हैं जो जेन के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं.



जेन्स मां, वन्ने, जिनकी मृत्यु 2000 में हुई, ने हमेशा अपनी बेटी को अपने सपने साकार करने के लिए प्रोत्साहित किया. इसलिए यह पूरी तरह से उचित लगता है कि जेन आज के बच्चों के लिए भी वैसा ही करना चाहती हैं. 1991 में, सोलह स्थानीय अफ्रीकी किशोरों के एक समूह ने, जेन से मुलाकात की और पहला "रूट्स एंड शूट्स" क्लब शुरू किया. "रूट्स एंड शूट्स" क्लब उन बच्चों के लिए है, जो युवा जेन की तरह ही, जानवरों के बारे अधिक जानना चाहते हैं और साथ ही उनकी सुरक्षा के तरीकों के बारे में सीखना चाहते हैं. अब 120 से अधिक देशों में "रूट्स एंड शूट्स" क्लब हैं.

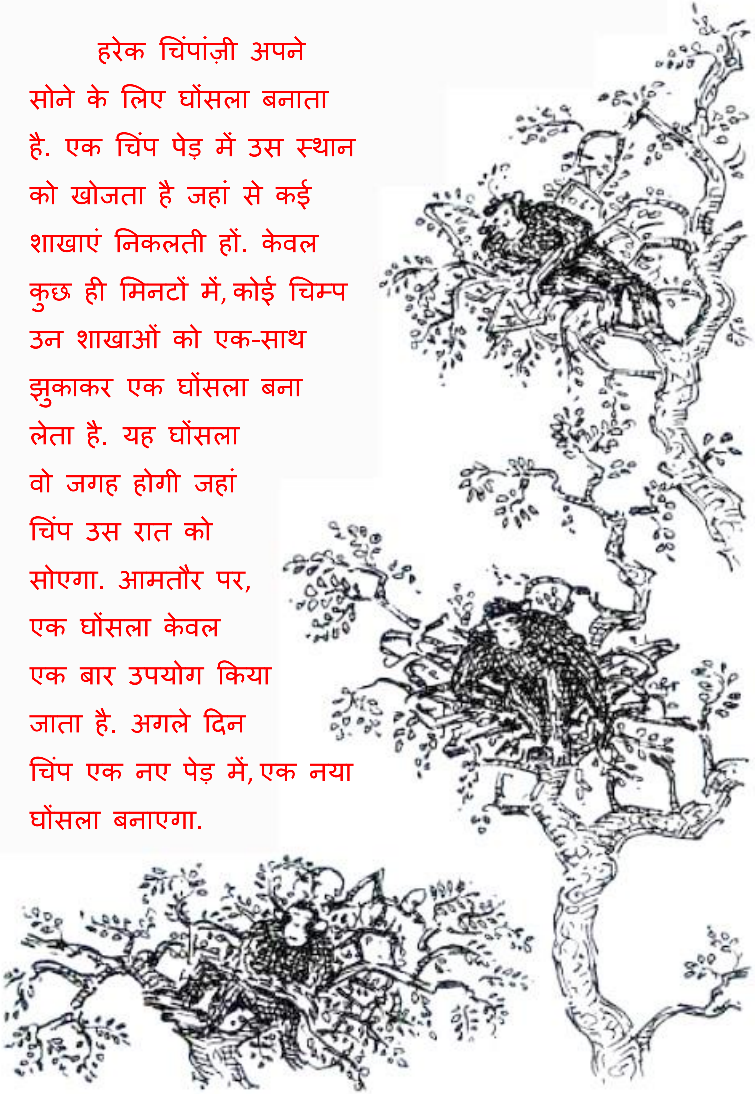


और ज़रा सोचिए कि यह सब "जुबली" नामक एक अजीब खिलौना चिंपैंजी के साथ शुरू हुआ!



चिम्प्स कहाँ सोते हैं?

हरेक चिंपांज़ी अपने सोने के लिए घोंसला बनाता है. एक चिंप पेड़ में उस स्थान को खोजता है जहां से कई शाखाएं निकलती हों. केवल कुछ ही मिनटों में, कोई चिम्प उन शाखाओं को एक-साथ झुकाकर एक घोंसला बना लेता है. यह घोंसला वो जगह होगी जहां चिंप उस रात को सोएगा. आमतौर पर, एक घोंसला केवल एक बार उपयोग किया जाता है. अगले दिन चिंप एक नए पेड़ में, एक नया घोंसला बनाएगा.



जेन गुडॉल के जीवन की समयरेखा

1934 का जन्म 3 अप्रैल को लंदन, इंग्लैंड में हुआ

1938 बहन, जूडी, जेन के चौथे जन्मदिन पर पैदा हुई

1940 गुडऑल परिवार इंग्लैंड के समुद्र तटीय शहर बोर्नमाउथ चला गया

1952 हाई स्कूल से स्नातक की डिग्री मिली

1957 पहली बार 13 मार्च को अफ्रीका के लिए रवाना हुईं

1960 गोम्बे स्ट्रीम गेम रिजर्व में गईं

1964 ह्यूगो वैन लॉविक से शादी की

1967 जेन और ह्यूगो का एक बेटा हुआ जिसका प्यार से “ग्रब” नाम रखा गया

1971 "इन द शैडो ऑफ मैन", अफ्रीका में उनके अनुभवों के बारे में पुस्तक प्रकाशित

1974 ह्यूगो से तलाक

1975 जेन ने तंजानिया सरकार के सदस्य, डेरेक ब्रायसन से शादी की

1980 डेरेक ब्रायसन का कैंसर से निधन

1986 जंगली चिंपांजी के विलुप्त होने के खतरों के बारे में सीखा

1991 "रूट्स एंड शूट्स" की शुरुआत सोलह अफ्रीकी किशोरों के साथ हुई

1994 TACARE कार्यक्रम की शुरुआत

2000 "रीज़न फ़ॉर होप: ए स्पिरिचुअल जर्नी” प्रकाशित हुई

2002 ह्यूगो, जेन्स के पहले पति का कैंसर से देहांत

जेन गुडॉल की विश्व समय-रेखा

1935 जुबली, एक बच्चा चिंपैंजी, लंदन चिड़ियाघर में पैदा हुआ

1938 पहली सुपरमैन कॉमिक बुक प्रकाशित हुई

1939 यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ

1939 में जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ा तब गुडऑल लड़कियां युवा थीं. एडोल्फ हिटलर जर्मनी और ऑस्ट्रिया के नाजी नेता थे. वो इंग्लैंड सहित पूरे यूरोप पर नियंत्रण करने की कोशिश कर रहा था.

1940 नाजियों ने फ्रांस पर अधिकार प्राप्त किया

1945 द्वितीय विश्व युद्ध मित्र राष्ट्रों की जीत के साथ समाप्त हुआ, फिल्म “टार्ज़न” रिलीज़ हुई

1947 जैकी रॉबिन्सन, मेजर लीग बेसबॉल खेलने वाले पहले अफ्रीकी अमेरिकी बने

1957 एल्विस प्रेस्ली के पास अपना पहला नंबर एक हिट "हार्टब्रेक होटल" रिकॉर्ड किया

1964 अफ्रीका में दो राज्य, तंजानिका और ज़ांज़ीबार मिलकर तंजानिया के संयुक्त गणराज्य का निर्माण हुआ

1966 वाशो नाम का एक चिम्पांजी ने अमेरिकी सांकेतिक भाषा सीखी

1993 दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद समाप्त, जो अश्वेतों और गोरों के बीच अलगाव का कारण था

1994 नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बने

2001 "द सिम्पसंस" के एक एपिसोड में जेन पर आधारित एक चरित्र दिखाया गया

2008 बराक ओबामा अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए